उच्च माध्यमिक पाठ्यक्रम

कक्षा XII

Part -II

हिंदी

केरल सरकार
शिक्षा विभाग
2015

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल
तिरुवनंतपुरम

राष्ट्रगीत

जनगण-मन अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंध-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंगा
विंध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा,
उच्छल जलधि तरंगा,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे
जय जय जय, जय हे।

प्रतिज्ञा

भारत हमारा देश है। हम सब भारतवासी भाई-बहन हैं। हमें अपना देश प्राणों से भी प्यारा है। इसकी समृद्धि और विविध संस्कृति पर हमें गर्व है। हम इसके सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न सदा करते रहेंगे। हम अपने माता-पिता, शिक्षकों और गुरुजनों का आदर करेंगे और सबके साथ शिष्टता का व्यवहार करेंगे। हम अपने देश और देशवासियों के प्रति वफ़ादार रहने की प्रतिज्ञा करते हैं। उनके कल्याण और समृद्धि में ही हमारा सुख निहित है।

Prepared by :
State Council of Educational Research and Training (SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram 695012, Kerala
Website : www.scertkerala.gov.in
e-mail : scertkerala@gmail.com
Phone : 0471 - 2341883, Fax : 0471 - 2341869
To be printed in quality paper - 80gsm map litho (snow-white)
© Department of Education, Government of Kerala

वक्तव्य

प्रिय मित्र,

बारहवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक आपके सामने है। जैसा कि आप जानते हैं, हिंदी भारत की संपर्क भाषा एवं राजभाषा है। इसी कारण से हिंदी भाषा पर अधिकार प्राप्त करना हर भारतीय के लिए गर्व की बात है। इस पाठ्यपुस्तक के माध्यम से हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं से आपका परिचय दृढ़ हो जाएगा। साथ ही भारतीय संस्कृति और हिंदी के अटूट संबंध का पर्दाफाश हो जाएगा। पाठभागों से गुज़रते वक्त अतिरिक्त वाचन सामग्री पर भी ध्यान देते रहें। पूरा भरोसा है कि भविष्य में भी हिंदी में अधिक से अधिक उपाधियाँ अर्जित करके आप देश के सुनहरे भविष्य निर्माण में एक नागरिक का कर्तव्य निभाएँगे।

डॉ एस रवींद्रन नायर

निदेशक,
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

TEXT BOOK DEVELOPMENT TEAM

Members

Sreekumaran B, GHSS Parambil, Kozhikode
Dr. Pramod P, DB HSS Thakazhy, Alappuzha
Dr. N I Sudheesh Kumar, BNV V&HSS Thiruvallam, Thiruvananthapuram
Ullas Raj, HDPS HSS Edathirinji, Thrissur
Prasanth K V, St. Joseph's Boys' HSS, Kozhikode
Abdussamed V, GR HSS Kottakkal, Malappuram
Harish Babu B, Oriental HSS Tirurangadi, Malappuram
Justin Jose P, St. Francis HSS Mattom, Thrissur
Santhosh Kumar A R, MV HSS Thundathil, Thiruvananthapuram
Dr. Sreevidya L K, GHSS Aruvikkara, Thiruvananthapuram
Smitha S L, Govt. Tamil HSS Chalai, Thiruvananthapuram
Daniel V Mathew, MSM HSS, Chathinamkulam, Kollam
Anilkumar.R, HSS Kandamangalam, Alappuzha

Experts

Dr. H Parameswaran, Rtd. Principal, University College, Thiruvananthapuram

Dr. N Suresh, Hon. Director, Centre for Translation Studies, University of Kerala

Dr. B Asok, Head of the Department, Govt. Brennen College, Thalassery

Prof. R I Santhi, Associate Professor, Govt. College for Women, Thiruvananthapuram

Artists

Saji V
Thiruvananthapuram
Rajendran C.
AVGVHS, Thazhava, Kollam

Lay-Out

Haridas M A
Irinjalakuda

Academic Co-ordinator

Dr. Rekha R Nair, Research Officer, SCERT

State Council of Educational Research and Training(SCERT)
Poojappura, Thiruvananthapuram - 695 012.

पन्नों से गुज़रें...

इकाई एक 7- 27

झंडा ऊँचा रहे हमारा

मातृभूमि 9- 13
कविता — *मैथिलीशरण गुप्त*

बेटी के नाम 14 -21
जवाबी पत्र — *बहादुर शाह ज़फ़र*

मेरे भारतवासियो... 22 - 27
भाषण — *जवाहरलाल नेहरू*

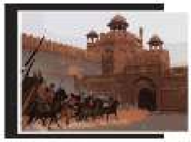

इकाई दो 28 - 54

निज भाषा उन्नति अहै

सूरीनाम में पहला दिन 30 - 38
सफ़रनामा — *हिमांशु जोशी*

मेरे लाल 39 - 44
पद — *सूरदास*

दोस्ती 45 - 49
फिल्मी गीत — *आनंद बख्शी*

मंज़िल की ओर 50 - 54
पारिभाषिक शब्दावली

पन्नों से गुज़रें...

इकाई तीन — 55- 81

मान-सम्मान मिले नारी को

ज़मीन एक स्लेट का नाम है — 57- 64
आत्मकथा — *एकांत श्रीवास्तव*

सपने का भी हक नहीं — 65- 67
कविता — *डॉ जे बाबू*

मुरकी उर्फ़ बुलाकी — 68 - 77
कहानी — *अमृता प्रीतम*

हाइकू — 78 - 81
कविता — *डॉ भगवतशरण अग्रवाल*

इकाई चार — 82 - 102

बुझा दीपक जला दो

कुमुद फूल बेचनेवाली लड़की — 84 - 88
कविता — *ओ एन वी कुरुप*
अनुवाद: डॉ एस तंकमणि अम्मा

वह भटका हुआ पीर — 89 - 94
संस्मरण — *राज बुद्धिराजा*

आदमी का चेहरा — 95 - 97
कविता — *कुँवर नारायण*

दवा — 98 - 102
व्यंग्य — *हरिशंकर परसाई*

अतिरिक्त वाचन सामग्री — 103 - 112

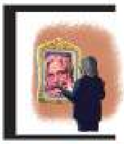

इकाई - एक

झंडा ऊँचा रहे हमारा

आपकी पहली इकाई है झंडा ऊँचा रहे हमारा। यह इकाई स्वतंत्रता के महत्व को दर्शाकर देशप्रेम की माँग करती है । पहला पाठ भारत के राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की देशप्रेम भरी कविता है। मातृभूमि का गुणगान करनेवाली यह कविता देश के लिए अपनी जान अर्पित करने का परोक्ष आह्वान करती है। इकाई का दूसरा पाठ सम्राट बहादुरशाह ज़फर द्वारा अपनी बेटी को जेल से भेजा गया खत है । अपनी बेटी तथा देश की जनता के प्रति सम्राट के प्यार-भरे आँसू से खत भीगा पड़ा है । आगे भारत की स्वतंत्रता की ऐतिहासिक वेला में लाल किले पर तिरंगा झंडा फहराते हुए देशवासियों को संबोधित करनेवाले प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का भाषण है । इकाई के हर पाठ के ज़रिए भारत का तिरंगा झंडा ऊँचाई पर लहरा रहा है।

मातृभूमि

बेटी के नाम...

मेरे भारतवासियो...

अधिगम उपलब्धियाँ

- दृविवेदी युगीन कविता की प्रवृत्तियों पर चर्चा करके कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- पत्र की शैली पहचानकर विभिन्न प्रसंगों पर पत्र लिखता है।
- पत्र के आशय का विश्लेषण करके विधांतरण करता है।
- भाषण की शैली पहचानकर विभिन्न सामाजिक विषयों पर भाषण तैयार करता है।
- भाषण का आशयग्रहण करके स्वतंत्रता का महत्व पहचानकर टिप्पणी लिखता है।
- अंग्रेज़ी के छोटे-से अनुच्छेदों का हिंदी में अनुवाद करता है।

- यह चित्र किससे संबंधित है ?
- यह यात्रा किसके लिए थी ?

भारत की स्वतंत्रता के लिए लाखों देशभक्त अपनी अपनी राह पर चले थे। कुछ गुप्त रूप से, कुछ हथियार लेकर, कुछ अहिंसा की राह पर तो कुछ अपनी ओजभरी वाणी में लोगों को सचेत करते रहे। इनमें कुछ कवि अपनी पंक्तियों से देश के लिए सर्वस्व अर्पित करने का आह्वान करते रहे। इन सबका फल निकला - भारत की स्वतंत्रता। यहाँ हम ऐसी एक कविता से परिचय पाएँगे।

मातृभूमि

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुंदर है।
सूर्य-चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।।
नदियाँ प्रेम प्रवाह फूल तारे मंडन हैं।
बंदीजन खग-वृंद, शेषफन सिंहासन है।।
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की।
हे मातृभूमि! तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।।
जिसके रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं।।
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए।।
हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में ?
पाकर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा।
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ?
तेरी ही यह देह, तुझी से बनी हुई है।
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है।।
फिर अंत समय तू ही इसे अचल देख अपनाएगी।
हे मातृभूमि! यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी।।

- मैथिलीशरण गुप्त

शेषफन : *हिंदू मिथक के अनुसार शेषनाग के फन पर (अनंत) भूमि स्थित है। अनंत प्रकृति का प्रतीक है।*

परमहंस : *छठे साल की आयु में एक दिन रामकृष्ण परमहंस खेतों में घूम रहे थे। अचानक उनकी दृष्टि बगुलों की एक पंक्ति पर पड़ी जो काली घटाओं की ओर उड़ रहे थे। यह दृश्य देखकर वे बेहोश हो गए और उस बेहोशी में उन्हें अपरिमित खुशी और शांति का अनुभव हुआ। इस आध्यात्मिक अनुभूति ने उनके जीवन को नई दिशा दी।*

दि्ववेदी युगीन प्रतिभाशाली कवि मैथिलीशरण गुप्त का जन्म उत्तर प्रदेश के चिरगाँव में 1885 को हुआ। भारतीय पुराणों के उपेक्षित कथा प्रसंग एवं पात्रों को लेकर युगानुरूप काव्य उन्होंने रचे। साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वध, पंचवटी, काबा-करबला आदि उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ हैं। देश ने 1954 को पद्‌मभूषण उपाधि से उनका सम्मान किया। 1965 को राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त का देहांत हुआ।

मेरी खोज

- दो शब्दों के मेल से बने हुए अनेक शब्द कविता में हैं। उन्हें चुनकर लिखें।
  जैसे : नीलांबर - नीले रंग का अंबर
- कवि ने मातृभूमि का वर्णन किस प्रकार किया है ?
- मातृभूमि से कवि का बचपन कैसे जुड़ा है ?
- तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा - कवि इस प्रकार क्यों सोचता है ?

अनुवर्ती कार्य

- कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
कवि का परिचय है			
काव्यधारा और रचनाकाल की सूचना है			
कविता का सार है			
अपने दृष्टिकोण से कविता का विश्लेषण किया गया है *(काव्यधारा और रचनाकाल के अनुरूप भाषा, प्रतीक आदि)*			

एक नज़र...

भारतीय परंपरा के अनुसार जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी प्यारी है। देशप्रेम भारतवासी के लिए भावना ही नहीं, सच्चाई भी है। करोड़ों भारतवासियों के इस देशप्रेम को कवि ने वाणी दी है। देश के गौरव चिह्नों का संकेत करके कवि ने बताया है कि इस मिट्टी के अन्न-जल से बनी हुई देह देश की ही संपत्ति है। देश के लिए इसका समर्पण हर भारतवासी के लिए गौरव है।

प्रसंगार्थ

नीलांबर	-	नीला आकाश
परिधान	-	वस्त्र
मेखला	-	करधनी
रत्नाकर	-	समुद्र
मंडन	-	आभूषण
खग-वृंद	-	पक्षीगण
शेषफन	-	शेष नाग का फन
पयोद	-	मेघ, बादल
बलिहारी	-	आत्म समर्पण
रज	-	धूलि
लोटकर	-	लुढ़क कर, having rolled
सरकना	-	रेंगना, to crawl
निरखना	-	देखना
मोद	-	हर्ष
सनना	-	घुलना

मित्रो, यह चित्र किसको सूचित करता है ?

- हाँ, 1947 के पूर्व दो सदियों तक भारत ब्रिटिश राज के अधीन था।
- भारत को स्वतंत्र बनाने के लिए न जाने कितनों ने अपनी जान की कुर्बानी दी।
- इतिहास साक्षी है कि 1857 से भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू हुई थी।
- इतिहास के पन्नों का एक हिस्सा यहाँ आपके सामने है...

ब्रिटिश सरकार ने 1857 की स्वतंत्रता की पहली लड़ाई को परास्त कर दिया। उन्होंने दिल्ली के अंतिम मुगल शासक बहादुर शाह ज़फ़र को 4 दिसंबर, 1858 को "मगर" नामक ब्रिटिश युद्धपोत से रंगून भेज दिया। रंगून में उनपर सख्त पहरा था। मिलने की इज़ाज़त तो दूर, वे खुलकर किसीसे बातचीत भी नहीं कर सकते थे। सख्त नज़रबंदी के बावजूद बहादुर शाह ज़फ़र ने अपनी कुछ चिट्ठियाँ दिल्ली पहुँचाईं। कुलसुम जमानी बेगम बहादुरशाह ज़फ़र की बड़ी बेटी थी। वे दिल्ली में अँग्रेज़ों की कैद में थीं। उन्होंने किसी तरह से एक खत अपने कैदी बाप को रंगून भेजा था। उसके जवाब में लिखी गई चिट्ठी यहाँ पेश है।

बेटी के नाम ...

प्यारी बिटिया,

तुमने अपने कैदी बाप को ख़त भेजा। खत क्या भेजा, मेरी जान, आँसूनामा था। बेटे ने पढ़कर सुनाया। एक दफ़ा सुना, जी न भरा। फिर कहा, बेटा फिर सुनाना। फिर सुना। वह भी रोया। मेरी आँखें भी आँसुओं से भीग गईं। कहा, बाबा, एक दफ़ा फिर पढ़ो। क्या लिखवाऊँ बेटी कि मुझपर तुम्हारे ख़त का क्या असर हुआ। तीन दफ़ा सुनने के बाद भी दिल को क़रार नहीं आया।

सच कहती हो। दिल्लीवाले मुझको रोते होंगे। वे क्या यह नहीं जानते, कि मैं भी उनको रोता हूँ। मैं तो ज़िंदा बैठा हूँ। वे तो बिना आई मौत मर गए। कितनों के बाप, कितनों के बेटे, कितनों के भाई फाँसियों पर चढ़ गए। कितने बच्चे यतीम हो गए, कितनी औरतें बेवा हो गईं। घर लुट गए नहीं बल्कि खोद डाले गए और उनपर हल चलवा दिए गए। दिल्ली में जब मेरा मुकदमा चल रहा था, उसी ज़माने में तबाही और बरबादी के किस्से सुने थे। मेरे यहाँ आ जाने के बाद, पता नहीं और क्या-क्या परेशानियाँ शहरवालों पर पड़ी होंगी। अब हँसें या रोएँ, कोई फायदा नहीं। हम सब कालेपानी में हैं। अपने वतन दिल्ली से सैकड़ों कोस दूर, घर से जुदा और ऐसे जुदा कि अब जीते-जी किसीसे मिलने की आस नहीं है। मुझे याद आया, जब तुम्हारी शादी हुई थी और 'गालीब' और 'जौक' ने तुम्हारी बारात की अगवानी के सेहरे लिखे थे।

अब यहाँ न वह लालकिला है, और न पहरेदार। बस, लकड़ी का एक पुराना-सा मकान है, जो बरसात में टपकता है और जिसमें दो-चार कमरों के सिवाय ज़्यादा गुंजाइश नहीं है।

एक दफ़ा की बात है। ईद थी। उस मौक़े पर चंद मुसलमान मेरे लिए कुछ तोहफ़े लेकर आए। मैंने उनसे कहा, 'भाई, ये तोहफ़े मैं नहीं ले सकता।' उन्होंने जब बहुत कहा तो कुछ तोहफ़े ले लिए। उसके एवज़ में मैंने मलिका का एक हार उनको दे दिया। दूसरे दिन हुक़्म आया कि इन मुगलों के पास जवाहरात बहुत ज़्यादा हैं। इन कैदियों को दिया जाने वाला खर्चा इनकी ज़रूरत से ज़्यादा है। फिर वही हुआ, जिसका डर था। हमारा खर्चा आधा कर दिया गया।

क्या खबर कि यह ख़त तुमको मिलेगा भी या नहीं? सुनता हूँ, वे आदमी भरोसे के काबिल हैं, जिनके हाथ यह खत भेजा जाएगा। लेकिन कितने ही शख्स मैंने ऐसे देखे हैं, जो आखिर में दग़ाबाज़ और दूसरों के भेजे जासूस साबित हुए। लेकिन इस ख़त में मैंने ऐसा लिखा ही क्या है, जिसकी मुझे फिक्र हो। एक बाप ने एक बेटी को ख़त लिखवाया है। न इसमें अपने मुल्क की कोई बात है, न गैर-मुल्क की। हमारी कब्र परदेस में बनेगी, तय है। लेकिन अभी तो हम लकड़ी की भीगी हुई कब्र में ज़िंदा ही दफ़न हैं। जब मर जाएँगे, तब भी कब्र में ही होंगे। बस, बेटी, खुदा हाफिज़।

-तुम्हारे कैदी बाप ने लिखवाया

गालिब और जौक उर्दू एवं फारसी भाषा के महान शायर थे। मुगल काल के आखिरी शासक बहादुर शाह ज़फ़र के दरबारी कवि भी रहे थे।

मेरी खोज

- हिंदी में अन्य भाषाओं से आए हुए कई शब्द हैं। निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी विदेशी शब्द पत्र से ढूँढ़कर लिखें।

  अनाथ -

  सांत्वना -

  देश -

  नाश -

  संभावना -

  विधवा -

  बार -

  इनाम -

  योग्य -

  व्यक्ति -

  चिंता -

- कैदी बाप को अपनी बेटी का ख़त एक आँसूनामा था - क्यों?
- दिल्लीवाले मुझको रोते होंगे... मैं भी उनको रोता हूँ - यहाँ शासक का कौन-सा गुण प्रकट होता है?
- 'यह ख़त तुमको मिलेगा भी या नहीं' - बादशाह के मन में ऐसा शक क्यों उभरा होगा?

अनुवर्ती कार्य

- बादशाह के ख़त के निम्नलिखित वाक्य पढ़ें।
    - ⁎ तीन दफ़ा सुनने के बाद भी दिल को क़रार नहीं आया।
    - ⁎ दिल्लीवाले मुझको रोते होंगे। वे क्या यह नहीं जानते कि मैं भी उनको रोता हूँ।
    - - उपर्युक्त वाक्यों के आधार पर बादशाह के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।
- बेटी के आँसूनामा ने बादशाह के मन को विचलित कर दिया। वे उस दिन की डायरी में इसका जिक्र करते हैं। वह डायरी तैयार करें।

सहायक संकेत:

- ⁎ परिवारवालों की सोच
- ⁎ दिल्लीवासियों के प्रति आकुलता
- ⁎ ख़त पढ़ने पर उत्पन्न दर्द

- सोनू के नाम मित्र का यह पत्र पढ़ें। इसके आधार पर सोनू का जवाबी पत्र तैयार करें।

प्रिय सोनू,

तुम पढ़ाई की छुट्टियाँ कैसे बिता रही हो? मैंने तीन विषय पूरे किए। सोनू, कल एक अविस्मरणीय घटना घटी। कल पिताजी एक वृत्तचित्र की सी.डी. लाए। रात को पढ़ाई के बाद मैंने वह देखा। वाह! कितना जोशीला था... स्वतंत्रता के लिए अपनी जान का बलिदान करनेवाले वीर शहीदों की कहानी थी। सोनू हमारा देश वीरों की भूमि है। मैं यह सी.डी तुम्हें भेज रही हूँ। समय मिलने पर तुम ज़रूर देखना। देखने के बाद अपना अनुभव ज़रूर मुझे लिखना।

तिरुवल्ला
10 जुलाई 2015

तुम्हारी सहेली
सुरभि

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
स्वाभाविक शुरुआत है			
प्राप्त पत्र की सूचना है			
पत्र का जवाब है			
स्वाभाविक अंत है			
पत्र की शैली एवं रूपरेखा है			

- ‘कितने बच्चे यतीम हो गए, कितनी औरतें बेवा हो गईं’। पत्र के इस प्रसंग के आधार पर ‘युद्‌ध के भीषण परिणाम’ पर एक कॉलाज़ तैयार करें।

एक नज़र...

यह अंतिम मुगल सम्राट बहादुर शाह ज़फ़र द्‌वारा अपनी बेटी को लिखा गया जवाबी पत्र है। इसमें बेटी और परिवार के प्रति सम्राट का प्यार, दिल्ली के अपने देशवासियों के प्रति प्रेम और सहानुभूति तथा एक सम्राट के बुरे हाल का जिक्र हुआ है। कैदख़ाने में रहते हुए भी उनके पत्र में साहस और देशप्रेम का स्वर मुख़रित हुआ है। यह ख़त 18 मई 1860 को लिखा गया था। इसके ढाई साल बाद 17 दिसंबर 1862 को कैदख़ाने में ही उन्होंने अंतिम साँस ली थी। रंगून में वे दफ़नाए गए।

प्रसंगार्थ

युद्धपोत	-	war-ship
सख्त	-	कठोर
इज़ाज़त	-	अनुमति
नज़रबंदी	-	वह सज़ा जिसमें किसी व्यक्ति को किसी स्थान में कड़ी निगरानी में रखा जाता है।
पेश	-	प्रस्तुत
कैदख़ाना	-	कारागृह, jail
आँसूनामा	-	दर्दभरी वाणी
एक दफ़ा	-	एक बार
क़रार	-	राहत
फाँसी पर चढ़ाना	-	मृत्युदंड देना
यतीम	-	अनाथ
बेवा	-	विधवा
हल चलाना	-	जोतना, to plough a field
तबाही	-	नाश
बरबादी	-	नाश
कालापानी	-	देश-निकाले का दंड
कोस	-	लगभग दो मील की दूरी का नाप
जुदा होना	-	अलग होना
आस	-	आशा
बारात की अगवानी के सेहरे	-	बारात के स्वागत के अवसर पर गाए जानेवाले मांगलिक गीत

गुंजाइश	-	संभावना, possibility
चंद	-	कुछ
तोहफ़े	-	इनाम
एवज़ में	-	बदले में
जवाहरात	-	रत्नसमूह
काबिल	-	योग्य
शख्स	-	व्यक्ति
दग़ाबाज	-	धोखा देनेवाला
जासूस	-	गुप्तचर
फ़िक्र	-	चिंता
मुल्क	-	देश
ग़ैर-मुल्क	-	विदेश
कब्र	-	मक़बरा, tomb
दफ़नाना	-	मृतक को ज़मीन में गाड़ना

आज़ादी के हस्ताक्षर

- अब तस्वीर के लिए एक अलग पाद-टिप्पणी दें।

दशाब्दों की कोशिशों और लाखों के बलिदानों के परिणाम स्वरूप 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। 14 अगस्त की मध्यरात्रि की वेला में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा फहराते हुए देश से जो अपील की थी वह देखें...

मेरे भारतवासियो...

कई वर्षों पहले हमने नियति को मिलने का एक वचन दिया था, और अब समय आ गया है कि हम अपने वचन को निभाएँ, पूरी तरह न सही, लेकिन बहुत हद तक आज रात बारह बजे जब सारी दुनिया सो रही होगी, भारत जीवन और स्वतंत्रता की नई सुबह के साथ उठेगा। एक ऐसा क्षण जो

इतिहास में बहुत ही कम आता है, जब हम पुराने को छोड़ नए की तरफ जाते हैं, जब एक युग का अंत होता है, और जब वर्षों से शोषित एक देश की आत्मा, अपनी बात कह सकती है, यह एक संयोग है कि इस पवित्र मौके पर हम समर्पण के साथ खुद को भारत और उसकी जनता की सेवा, और उससे भी बढ़कर सारी मानवता की सेवा करने के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं।

इतिहास के आरंभ के साथ ही भारत ने अपनी अंतहीन खोज प्रारंभ की, और न जाने कितनी ही सदियाँ इसकी भव्य सफलताओं और असफलताओं से भरी हुई हैं। चाहे अच्छा वक़्त हो या बुरा, भारत ने कभी इस खोज से अपनी दृष्टि नहीं हटाई और

‘आज हम दुर्भाग्य के एक युग का अंत कर रहे हैं और भारत पुनः खुद को खोज पा रहा है।’ पंडितजी के इस कथन का तात्पर्य क्या है?

कभी भी अपने उन आदर्शों को नहीं भूला जिसने इसे शक्ति दी। आज हम दुर्भाग्य के एक युग का अंत कर रहे हैं और भारत पुनः खुद को खोज पा रहा है। आज हम जिस उपलब्धि का उत्सव मना रहे हैं, वह महज़ एक कदम है, नए अवसरों के खुलने का। इससे भी बड़ी विजय और उपलब्धियाँ हमारी प्रतीक्षा कर रही हैं। क्या हममें इतनी शक्ति और बुद्धिमत्ता है कि हम इस अवसर को समझें और भविष्य की चुनौतियों को स्वीकार करें ? भविष्य में हमें विश्राम करना या चैन से नहीं बैठना है बल्कि निरंतर प्रयास करना है ताकि हम जो वचन बार-बार दोहराते रहे हैं और जिसे हम आज भी दोहराएँगे, उसे पूरा कर सकें। भारत की सेवा का अर्थ है लाखों-करोड़ों पीड़ित लोगों की सेवा करना। इसका मतलब है गरीबी और अज्ञानता को मिटाना। बीमारियों और अवसर की असमानता को मिटाना। हमारी पीढ़ी के सबसे महान व्यक्ति की यही महत्वाकांक्षा रही है कि हर एक आँख से आँसू मिट जाएँ। शायद ये हमारे लिए संभव न हो, पर जब तक लोगों की आँखों में आँसू हैं और वे पीड़ित हैं तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा। और इसलिए हमें परिश्रम करना होगा ताकि हम अपने सपनों को साकार कर सकें।

वे सपने भारत के लिए हैं, पर साथ ही वे पूरे विश्व के लिए भी हैं। आज कोई खुद को बिलकुल अलग नहीं सोच सकता क्योंकि सभी राष्ट्र और लोग एक दूसरे से बड़ी समीपता से जुड़े हुए हैं। शांति को अविभाज्य कहा गया है। इसी तरह से स्वतंत्रता भी अविभाज्य है। समृद्धि भी और विनाश भी। अब इस दुनिया को छोटे-छोटे हिस्सों में नहीं बाँटा जा सकता। हमें स्वतंत्र भारत का महान निर्माण करना है, जहाँ उसके सारे बच्चे रह सकें।

जय हिंद !

मेरी खोज

- नेहरू ने अपने भाषण में योजकों (वाक्यों को जोड़नेवाले शब्द) से वाक्यों को जोड़ दिया है। उनकी सूची तैयार करें।

  जैसे : कि, और

अनुवर्ती कार्य

- नेहरूजी का भाषण पढ़नेवाली एक छात्रा अपने मित्र से इसके बारे में बातचीत करती है। वह बातचीत तैयार करें।
- निम्नलिखित अनुच्छेद का संक्षेपण करें।

कई वर्षों पहले हमने नियति को मिलने का एक वचन दिया था, और अब समय आ गया है कि हम अपने वचन को निभाएँ, पूरी तरह न सही, लेकिन बहुत हद तक आज रात बारह बजे जब सारी दुनिया सो रही होगी, भारत जीवन और स्वतंत्रता की नई सुबह के साथ उठेगा। एक ऐसा क्षण जो इतिहास में बहुत ही कम आता है, जब हम पुराने को छोड़ नए की तरफ जाते हैं, जब एक युग का अंत होता है, और जब वर्षों से शोषित एक देश की आत्मा, अपनी बात कह सकती है, यह एक संयोग है कि इस पवित्र मौके पर हम समर्पण के साथ खुद को भारत और उसकी जनता की सेवा, और उससे भी बढ़कर सारी मानवता की सेवा करने के लिए प्रतिज्ञा ले रहे हैं।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
मुख्य आशयों का चयन किया है			
अनावश्यक विस्तार को छोड़ा है			
अपनी भाषा को स्वीकारा है			
उचित शीर्षक दिया है			

➤ ऐतिहासिक दंडी यात्रा की पूर्व संध्या में गाँधीजी के विख्यात भाषण का अंश पढ़ें और हिंदी में अनुवाद करें।

"In all probability this will be my last speech to you. Even if the Government allow me to march tomorrow morning, this will be my last speech on the sacred banks of the Sabarmati. Possibly these may be the last words of my life here. I have already told you yesterday what I had to say. I wish these words of mine reached every nook and corner of the land."

(Probability - संभावना, Sacred - पवित्र, Nook and corner -कोने कोने)

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
स्रोत भाषा का आशय ग्रहण किया है			
आशय का विश्लेषण किया है			
लक्ष्य भाषा में आशय को अनूदित किया है			

प्रसंगार्थ

नियति - भाग्य
संयोग - आकस्मिक
महज़ - केवल

उठ खड़े हो भारत की उस एकता के लिए जिसने हमें स्वतंत्रता दिलाई, जो हमें सुरक्षित रखेगी और भारत को विकसित कराएगी।

इकाई दो

निज भाषा उन्नति अहै

आपकी दूसरी इकाई है निज भाषा उन्नति अहै। विश्व की भाषाओं में हिंदी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। पहला पाठ है सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन की यात्रा के दौरान सूरीनाम की विशेषता तथा वहाँ हिंदी भाषा की गरिमा दिखानेवाला सफ़रनामा। हिंदी भाषा के समान हिंदी साहित्य की भी एक गौरवमयी परंपरा है। इस परंपरा का स्वर्णिम समय है भक्तिकाल। भक्तिकाल को शोभा देनेवाली साहित्यिक भाषा है ब्रजभाषा। ब्रजभाषा के अनन्य कवि हैं सूरदास। इकाई का दूसरा पाठ कृष्ण के प्रति यशोदा माँ के वात्सल्य वर्णन और गोपियों के प्रेम से ओतप्रोत है। इकाई का तीसरा पाठ 'दोस्ती' हिंदी फिल्मी गीत का है। विश्व भर में हिंदी के प्रति प्रेम उत्पन्न कराने में फिल्मी गीतों की अहम भूमिका रही है। हिंदी भाषा की खूबी है विशिष्ट अर्थ प्रदान करने वाले शब्दों का भंडार। अंतिम पाठ उच्च माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों से परिचित कराता है। कुल मिलाकर यह इकाई हिंदुस्तान के भीतर और बाहर हिंदी के स्वरूप का दिग्दर्शन कराती है।

सूरीनाम में पहला दिन

मेरे लाल...

दोस्ती

मंज़िल की ओर...

अधिगम उपलब्धियाँ

- सफ़रनामा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है।
- विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- सफ़रनामा के आशय का विश्लेषण करके टिप्पणी लिखता है।
- मध्यकालीन भक्तकवि सूरदास के पदों की विशेषताओं पर चर्चा करके व्याख्या करता है।
- सूरदास के पदों का आस्वादन करके विधांतरण करता है।
- फिल्मी गीतों की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन करता है एवं टिप्पणी लिखता है।
- हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी फिल्मी गीतों की भूमिका एवं प्रासंगिकता पहचानकर गीतों का संकलन करता है।
- विज्ञान, वाणिज्य एवं मानविकी के क्षेत्र में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करता है।

"हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है"-

सुमित्रानंदन पंत

"मेरे भाग्य में अगला जन्म बदा है तो मैं आवारा के रूप में जन्म लेना चाहूँगा ताकि हमेशा मनमाना घूम सकूँ" -

एस. के. पोटेक्काट्ट

अब हमारा सफ़र शुरू हो...
हिंदी की दुनिया में...

सूरीनाम में पहला दिन

भूगोल की पुस्तकों में कभी पढ़ा था - भूमध्यरेखीय प्रदेशों में भीषण गरमी पड़ती है। प्रायः प्रतिदिन बारिश। इसलिए संसार में सबसे अधिक घने वन इसी क्षेत्र में पाए जाते हैं। ब्राजील की तिरानबे प्रतिशत भूमि गहरी हरियाली से आच्छादित है।

अतीत का यह पढ़ा आज प्रत्यक्ष देख रहे हैं - विमान से झाँक रहे हैं - नीला जल, काले-घने बादल और दूर कहीं हरियाली के छींटे।

विमान उतरने की प्रक्रिया में धीरे-धीरे धरती की ओर झुक रहा है। यात्रियों का कौतूहल भी बढ़ता चला जा रहा है। लगभग बीस हज़ार किलोमीटर की लंबी यात्रा के पश्चात् एक प्रकार के सुकून का अहसास !

सूरीनाम की राजभाषा डच है जबकि अंग्रेज़ी व्यापक रूप से बोली जाती है। भारतीय अप्रवासी सरनामी हिंदुस्तानी बोलते हैं जो भोजपुरी तथा अवधी भाषाओं का मिश्रण है तथा इसमें कुछ शब्द डच, अंग्रेज़ी तथा क्रियोल के भी प्रयुक्त होते हैं।

सूरीनाम, जो वर्ष 1975 तक डच उपनिवेश था, दक्षिण अमेरिका के उत्तर-पूर्वी तट पर स्थित है। यह फ्रेंच गुयाना एवं गुयाना के मध्य, ब्राजील के उत्तर में स्थित है। इसका अधिकांश भू-भाग लहरदार पहाड़ियों एवं संकरे दलदली तटवर्ती मैदानों से युक्त है।

हिंदी भाषा की सत्रह बोलियाँ हैं। भोजपुरी और अवधी उनमें से दो प्रमुख बोलियाँ हैं।
हनुमानचालीसा हनुमान को श्रीराम के एक आदर्श भक्त के रूप में चित्रित अवधी भाषा में लिखित चालीस चौपाइयों की रचना है। इसके रचयिता तुलसीदास हैं।
तुलसीदास द्वारा अवधी भाषा में लिखित रामकथा पर आधारित महाकाव्य है रामचरितमानस।

पारामारिबो शहर लेखक को भारतीय शहर जैसा क्यों लगा?

जिस हिंदी को भोजपुरी-अवधी के रूप में, 'हनुमानचालीसा' तथा 'रामचरितमानस' आदि धर्मग्रंथों के माध्यम से भारत से जाते समय वे ले गए थे अपने साथ और जिसे उन्होंने तूफान के बीच दीये की तरह जलाए रखा - आज एक सौ तीस साल बाद वह एक नए रूप में साकार होकर उपस्थित हो रहा है। उसका वैश्विक स्वरूप उभर रहा है ! वह अब गिरमिटिया श्रमिकों की ही नहीं, शासकों, राष्ट्राध्यक्षों की भी भाषा बन गई है जो संसार के एक सौ बीस देशों में किसी-न-किसी रूप में अपनी उपस्थिति का अहसास जता रही है।

मॉरिशस, त्रिनिदाद, ब्रिटेन के पश्चात् 'विश्व हिंदी सम्मेलनों' की यह सातवीं यात्रा है - सातवीं मंज़िल। एक सौ तीस साल पहले जो प्रथम भारतीय श्रमिक यहाँ आए थे, उनके आगमन की स्मृति में इस 'हिंदी महापर्व' का आयोजन हो रहा है। भारत के अलावा अनेक देशों के हिंदी लेखक, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी प्रचारक, हिंदी सेवी अपनी उपस्थिति का अहसास जता रहे हैं।

लगभग साढ़े चार लाख आबादीवाले इस देश में, जिसके सैंतीस प्रतिशत लोग भारतीय मूल के हैं, सर्वत्र भारतीय-ही-भारतीय दीख रहे हैं। पारामारिबो शहर सूरीनामी नहीं, एक भारतीय शहर जैसा लग रहा है।

दिनांक 6 जून को प्रातः सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए सूरीनाम के अफ़्रिकी मूल के राष्ट्रपति रूनाल्डो वेनेत्शियान ने अपने उद्‍बोधन में कहा था - 'सूरीनाम और भारत के बीच प्रगाढ़ आत्मीय संबंध है। दोनों देश

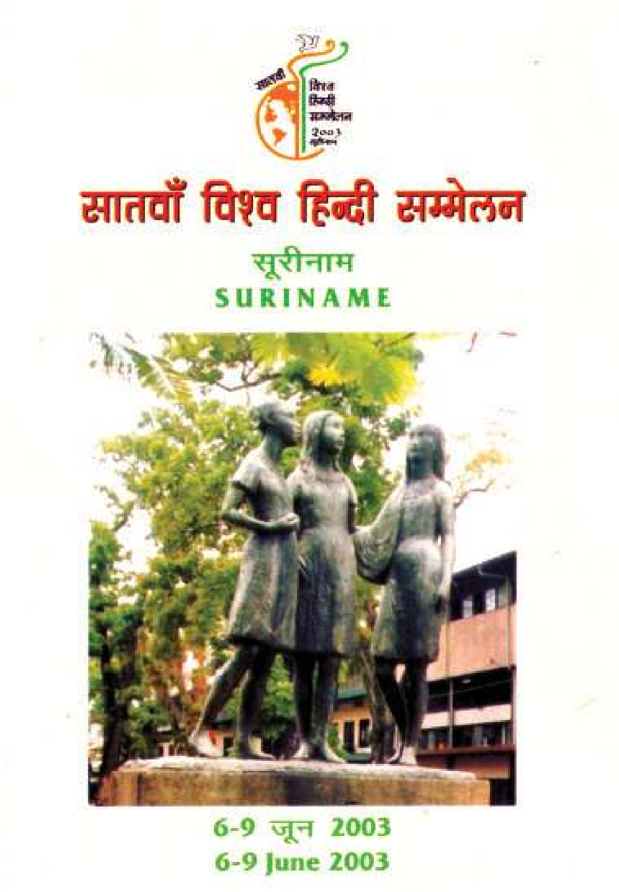

अनेक अर्थों में एक दूसरे से गहरे जुड़े हैं। दोनों के बीच पुराने भाषाई संबंध हैं। भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। हिंदी की जननी संस्कृत की अपनी विशेषताएँ हैं। उसके साथ-साथ आज विश्व की एक प्रमुख भाषा के रूप में हिंदी भी उभर रही है। सूरीनाम में हिंदी के प्रचार-प्रसार में, हिंदी को आम आदमी तक पहुँचाने में हिंदी फिल्मों तथा संगीत का भी विशेष योगदान रहा है। हिंदी चलचित्रों के प्रति सूरीनाम के भारतवंशियों का ही नहीं, अन्य सूरीनामी लोगों का भी गहरा लगाव है।'

एक दीप प्रज्वलित होते ही लगा कि एक साथ न जाने कितने जगमगाते दीपक जल उठे हैं। सूरीनामी भारतवंशियों का उत्साह देखने योग्य था। कहीं ऐसा अहसास हो रहा था जैसे एक सौ तीस साल से बिछुड़े बंधु आज फिर गले मिल रहे हैं। यह 'भरत-मिलाप' बहुत आह्लादित कर रहा था।

\- हिमांशु जोशी

'भरत-मिलाप' एक आलंकारिक प्रयोग है। आत्मीयता से जब एक भाई दूसरे भाई से मिलता है तब उसे सूचित करने के लिए 'भरत-मिलाप' का प्रयोग होता है।

हिमांशु जोशी हिंदी के बहुमुखी प्रतिभावान रचनाकार हैं। हिंदी की लगभग सभी विधाओं में उन्होंने अपनी लेखनी चलाई। उत्तराखंड में 1935 को उनका जन्म हुआ। पत्रकारिता तथा आकाशवाणी के क्षेत्र में उन्होंने कार्य किया। 'यात्राएँ', 'नॉर्वे : सूरज चमके आधी रात' आदि उनके श्रेष्ठ यात्रा-वृत्तांत हैं।

मेरी खोज

➤ सफ़रनामा में कई विशेषण शब्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे : **भीषण** गरमी। इस प्रकार के शब्द पाठ-भाग से ढूँढ़कर खंभा भरें।

विशेषण	विशेष्य
भीषण	गरमी
------	वन
------	जल
------	यात्रा
------	स्वरुप
------	मंज़िल

अनुवर्ती कार्य

➤➤ लेखक विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने के लिए पारामारिबो पहुँचे। सम्मेलन के उद्‌घाटन समारोह के बाद लेखक की बातचीत किसी भागीदार के साथ होती है। वह बातचीत लिखें।

सहायक संकेत:

- ✻ सम्मेलन का अनुभव
- ✻ राष्ट्रपति का भाषण
- ✻ हिंदी का प्रचार

▶▶ 'विश्वभाषा के रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार' विषय पर भाषण तैयार करें।

- ✻ संसार की सबसे बड़ी भाषाओं में एक।
- ✻ सांस्कृतिक विकास में सहायक।
- ✻ विश्व सौहार्द का संवाहक।
- ✻ बोलचाल में आसान।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
भूमिका है			
बिंदुओं को विकसित किया है			
अपना मत है			
मत का समर्थन किया है			
भाषण-शैली है			
उपसंहार है			

▶▶ सातवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन सूरीनाम में होनेवाला है। उसके लिए एक आकर्षक पोस्टर तैयार करें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
ज़रूरी विवरण है			
हिंदी का महत्व सूचित है			
संक्षिप्त वाक्य/वाक्यांश है			
आकर्षक रूपरेखा है			

विश्व हिंदी सम्मेलन

पहला	1975 जनवरी 10 से 12	नागपुर	भारत
दूसरा	1976 अगस्त 28 से 30	पोर्ट लूई	मॉरिशस
तीसरा	1983 अक्तूबर 28 से 30	नई दिल्ली	भारत
चौथा	1993 दिसंबर 02 से 04	पोर्ट लूई	मॉरिशस
पाँचवाँ	1996 अप्रैल 04 से 08	पोर्ट ऑफ स्पेन	त्रिनिदाद और टोबैगो
छठा	1999 सितंबर 14 से 18	लंदन	ब्रिटन
सातवाँ	2003 जून 06 से 09	पारामारिबो	सूरीनाम
आठवाँ	2007 जुलाई 13 से 15	न्युयॉर्क	अमरीका
नवाँ	2012 सितंबर 22 से 24	जोहान्सबर्ग	दक्षिण अफ्रीका

प्रसंगार्थ

भूगोल	-	geography
आच्छादित	-	आवृत, covered
हरियाली के छींटे	-	हरियाली के कण
सुकून	-	संतोष, satisfaction
अहसास	-	एहसास, feeling
दीया	-	दीप
वैश्विक	-	universal
गिरमिटिया श्रमिक	-	contracted labourer
जताना	-	बताना, समझाना
मंज़िल	-	लक्ष्य
प्राध्यापक	-	lecturer
आबादी	-	जनसंख्या
प्रगाढ़	-	सुदृढ़
आम आदमी	-	common people
बिछुड़े	-	अलग हुए

लोरी लोरी लोरी...
लोरी लोरी लोरी...
चंदनिया छुप जाना रे
छन भर को लुक जाना रे
निंदिया आँखों में आए
बिटिया मेरी सो जाए

लोरी कैसी लगी? लोरी में कौन-सा भाव प्रकट होता है? माधुर्य है न? तो प्राचीन हिंदी का ब्रजभाषा में लिखित वात्सल्य-भरा एक पद पढ़ें।

मेरे लाल...

सुतमुख देखि जसोदा फूली।
हरषित देखि दूध की दँतियाँ प्रेम मगन तनु की सुधि भूली।।
बाहिर ते तब नंद बुलाए देखौ धौं सुंदर सुखदाई।
तनक तनक सी दूध की दँतियाँ देखौ नैन सुफल करो आई।।
आनंद सहित महर तब आए मुख चितवन दोउ नैन अघाई।
'सूर' स्याम किलकत द्विज देख्यो मनो कमल पर बीजु जमाई।।

सूरदास

सूरदास का पद आपको कैसे लगा? सूरदास ने वात्सल्य के साथ-साथ कृष्ण की मुरली-माधुरी का तथा कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम का वर्णन भी किया है। यह पद पढ़ें ...

हे कान्ह...

जबहीं बन मुरली स्रवन ....
चकित भई गोप कन्या सब धाम काम बिसरीं ।।
कुल मरजाद बेद की आज्ञा नेकहु नाहिं डरीं।
स्याम सिंधु सरिता ललनागन जल की ढरनि ढरीं।।
सुत पति नेह भवन जन संका लज्जा नहीं करी।
'सूरदास' प्रभु मन हरि लीन्हों नागर नवल हरी।।

भारतीय आर्यभाषाओं की परंपरा में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के आगरा, मथुरा केंद्रित व्रजक्षेत्र में विकसित बोली है व्रजभाषा। वल्लभ संप्रदाय के प्रभाव में जब ब्रजबोली में कृष्ण विषयक साहित्य लिखा जाने लगा तो यह बोली साहित्यिक भाषा बन गई। भक्तिकाल के महान कवि सूरदास से लेकर आधुनिक काल के विख्यात कवि वियोगी हरि तक ने व्रजभाषा में प्रबंध काव्य रचे।

सूरदास सगुण भक्तिधारा के सर्वश्रेष्ठ कृष्णभक्त कवि हैं। उत्तरप्रदेश में 15 वीं सदी के अंतिम दशकों में उनका जन्म हुआ था। वे जन्मांध माने जाते हैं। सूरदास का वात्सल्य वर्णन अद्‌वितीय है। सूरसागर की बाललीलाएँ इसके उत्तम दृष्टांत हैं। श्रृंगार रस के वर्णन में भी उन्होंने अपनी कुशलता प्रकट की है। कृष्ण और गोपिकाओं के प्रेम का वर्णन इसका उदाहरण है।

मेरी खोज

- समानार्थी शब्द पठित पदों से ढूँढ़कर लिखें।

दाँत	सफल	मर्यादा
युवती	देखकर	सागर
वेद	तो	सुनकर
संतुष्ट हुई	होश	पुत्र
छोटा	दोनों	भूल गई
दृष्टि	बिजली	गोपिकाएँ
प्रवाह	चतुर	नया

- यशोदा माँ अपने आपको भूल गईं। कब और क्यों?
- 'मनो कमल पर बीजु जमाई' - का तात्पर्य क्या है?
- गोपिकाएँ कब अपने को भूलकर दौड़ीं?

अनुवर्ती कार्य

- बाललीला से संबंधित पहले पद की आस्वादन-टिप्पणी तैयार करें।
- मुरली की ध्वनि में लीन प्रणयातुर दो गोपिकाओं के बीच होनेवाली बातचीत लिखें।

सहायक संकेत:

* मुरली की ध्वनि की मधुरिमा
* कृष्ण के प्रति अनुराग
* अपने को भूल जाना

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
प्रसंगानुसार अभिव्यक्ति है			
स्वाभाविक शुरुआत है			
प्रवाहमयता है			
कल्पना है			
स्वाभाविक अंत है			

एक नज़र...

अपने बेटे का मोहक चेहरा देखकर माता यशोदा बहुत खुश हुईं। आह्लाद के साथ बेटे के दुधिए दाँतों को देखकर लाड़-प्यार में मग्न यशोदा का होश खो जाता है अर्थात् अपने आपको वह भूल जाती है। वह बाहर से अपने पतिदेव नंद को बुलाकर पुत्र का सुंदर सुखदाई रूप देखने को कहती है। वह कहती है, पुत्र के छोटे-छोटे दुधिए दाँतों को देखने पर नयन-सुख प्राप्त हो जाता है। पत्नी की बातें सुनकर आनंदित नंद अंदर आए, उनके मुख और चितवन खुशी से भर गए। सूरदास कहते हैं कि किलकारी करनेवाले कृष्ण के दाँतों को देखकर ऐसा लगता है मानो लाल कमल पर बिजली जम गई हो। बालकृष्ण का सौंदर्य अनुपम है। उनकी चेष्टाएँ हृदयहारी तथा अद्‌वितीय हैं।

जब मुरली का स्वर सुनाई पड़ा तब गोपिकाएँ चकित हुईं और वे सब कामकाज भूल गईं। कुल की मर्यादा तथा धर्मग्रंथों के अनुशासन से वे बिलकुल नहीं डरीं। पुत्र-पति का स्नेह, घर-बार तथा लोक-लाज की परवाह किए बिना वे कृष्ण रूपी सिंधु में सरिता के जल के समान जा मिलीं। सूरदास कहते हैं कि चतुर कृष्ण नित्य नए तरीके से गोपिकाओं के मन को हर लेते हैं।

प्रसंगार्थ

फूली	-	खुश हुई/प्रफुल्लित हुई
सुतमुख	-	पुत्र का मुख
दूध की दँतियाँ	-	milk teeth
मग्न	-	लीन
तनु	-	युवती
सुधि भूली	-	अपने को भूलकर
बाहिर ते	-	बाहर से
देखौ धौ	-	देखो तो

तनक	-	छोटा
नैन सुफल करो	-	नयनों के होने का सुफल पाओ
महर	-	श्रेष्ठ पुरुष (नंद)
चितवन	-	दृष्टि
दोऊ	-	दोनों
अघाई	-	संतुष्ट हुई, तृप्त हुई
श्याम	-	कान्ह
किलकत	-	किलकारी करना (हर्ष ध्वनि करना)
द्विज	-	दाँत
बीजु	-	बिजली
जमाई	-	जम गई
बन	-	वन
स्रवन परी	-	सुनाई पड़ी
धाम काम	-	कामकाज
बिसरीं	-	भूल गईं
मरजाद	-	मर्यादा
बेद	-	वेद
नेकहु	-	थोड़ा-भी
नाहिं	-	नहीं
ललनागन	-	गोपिकाएँ
ढरनि	-	प्रवाह
ढरीं	-	बही
नेह	-	स्नेह
जन संका	-	लोगों की आशंका
हरि लीन्हों	-	हर लिया
नागर	-	चतुर
नवल	-	नया

- फिल्मी गीत आपको पसंद है न ?
- हिंदी भाषा को लोकप्रिय बनाने में फ़िल्मी गीत कहाँ तक उपयोगी रहे हैं ?

देश में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार को गति देने में हिंदी फिल्मी गीतों की अहम भूमिका रही है। एक ज़माने में भारत के सुदूर कोनों में जहाँ हिंदी भाषा का नामोनिशान तक नहीं था, वहाँ फ़िल्मी गीतों ने आकाशवाणी के माध्यम से गाँव-गाँव का दिल जीत लिया और हिंदी को संपर्क भाषा का दर्जा दिया। आज भी वह सिलसिला ज़ारी है। ऐसा एक गीत सुनें...

दोस्ती

ये दोस्ती ...
हम नहीं तोड़ेंगे
तोड़ेंगे दम मगर
तेरा साथ ना छोड़ेंगे
मेरी जीत, तेरी जीत
तेरी हार, मेरी हार
सुन ऐ मेरे यार
तेरा ग़म, मेरा ग़म
मेरी जान, तेरी जान
ऐसा अपना प्यार
जान पे भी खेलेंगे
तेरे लिए ले लेंगे
सबसे दुश्मनी
ये दोस्ती........
लोगों को आते हैं
दो नज़र हम मगर
देखो दो नहीं
हों जुदा या खफ़ा
ऐ खुदा है दुआ
ऐसा हो नहीं
खाना-पीना साथ है
मरना-जीना साथ है
सारी ज़िंदगी
ये दोस्ती...

फिल्म
शोले
संगीतकार
आर.डी.बर्मन
पार्श्वगायक
किशोर कुमार
मन्ना डे

आनंद बख्शी

वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिंडी में 1930 को आनंद बख्शी का जन्म हुआ। 'भला आदमी' फिल्म में गीतकार बनकर उनका पदार्पण हिंदी फिल्मी जगत में हुआ। अपने जीवनकाल में उन्होंने करीब 4000 गीत लिखे। 72 साल की आयु में 2002 को मुंबई में उनका निधन हुआ। फिल्म फेयर तथा ऐ.ऐ.एफ.ए पुरस्कारों से वे सम्मानित थे।

''गीतकार ह्रदय से कवि होते हैं, परंतु वह न कभी अपने उद्गारों को वाणी देता न भाषा पर अपना अधिकार दिखाने का अनावश्यक साहस करता। एक गीत उसकी कथा तथा प्रसंग की सृष्टि होती है।''

-आनंद बख्शी

आर. डी. बर्मन (1939 - 1994)

भारतीय फिल्मी संगीत जगत में आर. डी. बर्मन के नाम से मशहूर राहुल देव बर्मन ने हिंदुस्तानी के साथ पाश्चात्य संगीत का मिश्रण करके भारतीय संगीत को एक अलग पहचान दी।

किशोर कुमार

(1929-1987)

भारतीय सिनेमा के मशहूर पार्श्वगायक किशोर कुमार ने कई भारतीय भाषाओं के गीतों को आवाज़ दी थी। फिल्मी जगत में अभिनय और निर्देशन के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी पहचान जमाई। उनका असली नाम आभास कुमार गाँगुली था।

मन्ना डे

(1919-2013)

भारतीय फिल्मी जगत के सुप्रसिद्ध पार्श्वगायक मन्ना डे ने 1942 को फिल्म 'तमन्ना' से फिल्मी गायन की शुरुआत की। 3000 से अधिक गीतों को उन्होंने स्वर दिया। पद्मश्री, पद्मभूषण, तथा दादा साहब फालके पुरस्कारों से मन्ना डे सम्मानित हैं।

शोले

हिंदुस्तान की सार्वकालिक बेहतरीन फिल्म 'शोले' 1975 में बनी हिंदी भाषा की फिल्म है। जावेद अख्तर और सलीम खान की पटकथा पर रमेश सिप्पी के निर्देशन में शोले का जन्म हुआ। धर्मेंद्र, अमिताभ बच्चन, संजीव कुमार, अंजत खान, हेम मालिनी और जया बच्चन इसके कलाकार रहे। इस फिल्म ने सौ से ज्यादा सिनेमा घरों में रजतजयंती मनाई। मुँबई के मिनर्वा सिनेमाघर में इसे लगातार पाँच साल तक प्रदर्शित किया गया।

मेरी खोज

- इन शब्दों के समानार्थी शब्द गीत में ढूँढ़ें।
  दुख, दृष्टि, अलग, क्रोध, ईश्वर, आशीर्वाद
- दोस्ती को सूचित करनेवाली आपकी पसंद की सबसे श्रेष्ठ पंक्ति चुनकर लिखें।

अनुवर्ती कार्य

- आस्वादन-टिप्पणी लिखें।
- 'शोले' फिल्म देखें और फिल्म में प्रसंग के अनुरूप 'ये दोस्ती' गीत के औचित्य पर चर्चा करें।
- मनपसंद पाँच हिंदी फिल्मी गीतों का संकलन करें और उनके गीतकार, संगीतकार तथा पार्श्वगायक का परिचय भी तैयार करें।

प्रसंगार्थ

ग़म	-	दुख
जुदा	-	अलग
ख़फ़ा	-	नाराज़

मंज़िल की ओर...

भारतीय रिज़र्व बैंक सर्विसेज़ बोर्ड, मुंबई
विज्ञापन सं. 12/2015-16

1. भारतीय नागरिकों से भारतीय रिज़र्व बैंक में राजभाषा अधिकारी ग्रेड ए के पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। कुल रिक्तियां 12 हैं।
2. इन पदों के लिए उम्मीदवार केवल ऑन-लाइन तरीके द्वारा बैंक की वेबसाइट (www.rbi.org.in) के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। ऑन-लाइन आवेदन जमा करने के बाद उम्मीदवार ऑन-लाइन आवेदन का प्रिंटआउट अनिवार्य रूप से निकाल लें।
3. अनिवार्य रूप से यह अपेक्षित है कि ऑन-लाइन आवेदन का प्रिंटआउट (हार्ड कापी) प्रमाणपत्रों/दस्तावेजों की प्रतियों तथा विधिवत् भरे हुए बायो-डाटा फार्म के साथ अंतिम तारिख तक साधारण डाक द्वारा महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक सर्विसेज़ बोर्ड, पोस्ट बैग नं. 4618, मुंबई सेंट्रल डाकघर, मुंबई 400008" को भेजें।
4. अन्य सभी ब्यौरों जैसे आयु, अर्हता, अनुभव, चयन योजना, ऑन-लाइन आवेदन ज़मा करने तथा अन्य अनुदेशों के लिए कृपया दिनांक 13 अगस्त 2015 को भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट (www.rbi.org.in) पर प्रदर्शित किया जानेवाला तथा दिनांक 23-29 जुलाई 2015 के रोज़गार समाचार में प्रकाशित होनेवाला विस्तृत विज्ञापन देखें।
5. महत्वपूर्ण तारीखें :-

वेबसाइट लिंक खुला रहेगा-आवेदनों के ऑन-लाइन पंजीकरण के लिए	13.08.2015 से 10.09.2015 तक
शुल्क का भुगतान ऑन-लाइन	13.08.2015 से 10.09.2015 तक
बैंक शाखाओं में शुल्क का भुगतान (ऑफ-लाइन)	19.08.2015 से 12.09.2015 तक
प्रमाणपत्रों/दस्तावजों की प्रतियों तथा बायो-डाटा फार्म के साथ आवेदन की हार्ड कॉपी प्राप्त करने की अंतिम तारीख	19.09.2015 (अपराह्न 6 बजे)

वीणा	: जी, मैं वीणा।
श्रीवास्तव	: अच्छा, अंदर बैठिए। दुपहर को आपके प्रोफसर ने फोन किया था।
वीणा	: जी, मैं भारतीय रिज़र्व बैंक में राजभाषा अधिकारी के पद की उम्मीदवार हूँ। कृपया मुझे.....
श्रीवास्तव	: हाँ वीणा, प्रोफसर ने सब कुछ बता दिया था। लो वीणा, यह हमारा संविधान है। इसमें राजभाषा का भी उल्लेख है। यह पारिभाषिक शब्दावली है। ये दोनों अपने पास रख लेना।
वीणा	: हाँ जी, बहुत-बहुत धन्यवाद।

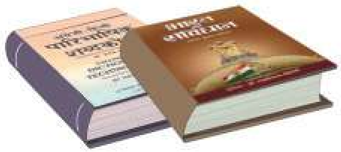

भाग 17

राजभाषा

अध्याय 1- संघ की भाषा

343 संघ की राजभाषा (1) संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होनेवाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

हिंदी भारत की राजभाषा है। इस कारण से मुख्य विषय के रूप में हिंदी पढ़नेवाले छात्रों के लिए देश भर में हज़ारों की संख्या में रोज़गार के अवसर हैं। राजभाषा अधिकारी, हिंदी अफ़सर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी आशुलिपिक, संवाददाता, हिंदी टंकक आदि आदि...। इन पदों पर रहकर आपको पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना होगा। अब हम देखेंगे आपकी कक्षाओं में प्रयुक्त शब्दों का पारिभाषिक रूप...

Acceleration	-	त्वरण
Accountancy	-	लेखाशास्त्र
Advance	-	पेशगी
Affidavit	-	शपथ-पत्र
Algebra	-	बीज गणित
Archaeology	-	पुरातत्व शास्त्र
Atmosphere	-	वायुमंडल
Atom	-	परमाणु
Average	-	औसत
Bacteria	-	जीवाणु
Bio-diversity	-	जैव-विविधता
Bio-chemistry	-	जैव-रसायन
Blood pressure	-	रक्त चाप
Borrower	-	उधारकर्ता
Botany	-	वनस्पति-विज्ञान
Certificate	-	प्रमाणपत्र
Cess	-	उपकर
Chemistry	-	रसायन-विज्ञान
Colonialism	-	उपनिवेशवाद
Commerce	-	वाणिज्य
Copyright	-	सर्वाधिकार

Discount	-	बट्टा
Eclipse	-	ग्रहण
Ecology	-	पारिस्थितिकी
Economics	-	अर्थशास्त्र
Energy	-	ऊर्जा
Equation	-	समीकरण
Geography	-	भूगोल
Geometry	-	रेखागणित
Gravitation	-	गुरुत्वाकर्षण
Humanities	-	मानविकी
Liberalism	-	उदारतावाद
Odd number	-	विषम संख्या
Pattern	-	प्रतिमान
Percent	-	प्रतिशत
Philosophy	-	दर्शनशास्त्र
Physics	-	भौतिकी
Political Science	-	राजनीति-विज्ञान
Radiation	-	विकिरण
Ratio	-	अनुपात
Satellite	-	उपग्रह
Sociology	-	समाज-विज्ञान
Statistics	-	सांख्यिकी
Trade Union	-	श्रमिक-संघ
Ultraviolet	-	पराबैंगनी
Vaccination	-	टीकाकरण
Virus	-	विषाणु
Zoology	-	जंतुविज्ञान

मार्च 13

आज मेरी ज़िंदगी का सुनहरा दिन है। आज रिज़र्व बैंक की हैदराबाद शाखा में मुझे राजभाषा अधिकारी के पद पर नियुक्ति मिली है। मुझे उन सब गुरुवरों की याद आ रही है जिन्होंने मुझे हिंदी सिखाई। कल श्रीवास्तव जी को खत लिखूँगी ज़रूर... उन्होंने मुझे राह दिखाई थी....

अनुवर्ती कार्य

- रिज़र्व बैंक की हैदराबाद शाखा में राजभाषा अधिकारी के पद पर नियुक्ति की खुशखबरी देते हुए श्रीवास्तव के नाम वीणा चिट्ठी लिखती है। वह चिट्ठी तैयार करें।

- **सही मिलान करें :-**

Geography	मानविकी
Energy	समीकरण
Virus	प्रमाण पत्र
Equation	विषाणु
Certificate	भूगोल
Humanities	ऊर्जा

प्रसंगार्थ

उम्मीदवार	-	candidate
दस्तावेज़	-	document
भुगतान	-	payment
संविधान	-	constitution
संघ	-	union
अंक	-	number

राष्ट्र की पहचान है जो, भाषाओं में महान है जो
जो सरल सहज समझी जाए, उस हिंदी का सम्मान करें।

इकाई-तीन

मान-सम्मान मिले नारी को

तीसरी इकाई है 'मान-सम्मान मिले नारी को'। इसमें एक आत्मकथांश, हिंदीतर प्रदेश की कविता, कहानी एवं हाइकू कविता है। बिदाई किसी भी हालत में दर्दनाक है, चाहे वह मिट्टी की हो या कन्या की। एकांत श्रीवास्तव का आत्मकथांश संबंधों की गहराई को सच्चाई से आँकनेवाला आईना बन गया है। अच्छे सपने कौन नहीं चाहते। सपने में हम अपने अभावों की पूर्ति की तसल्ली पाते हैं। हिंदीतर भाषी कवि डॉ. जे बाबू ने वाणी दी है ऐसी एक औरत की पीड़ा को जिसका सपना भी दर्दभरा है। इकाई का तीसरा पाठ अमृता प्रीतम की कहानी है। कहानी में नारीत्व की रक्षा के लिए ज़िंदगी भर तड़पती रहनेवाली एक ग्रामीण नारी के संघर्षों का चित्रण किया है। यह कहानी नारी समाज के लिए प्रेरणादायक है। इकाई का अंतिम पाठ जापानी कविता-शैली हाइकू में रचित छोटी, पर मर्मस्पर्शी कविताओं का है। कुल मिलाकर यह इकाई नारी समस्या को संबोधित करती है।

ज़मीन एक स्लेट का नाम है

सपने का भी हक नहीं

मुरकी उर्फ़ बुलाकी

हाइकू

अधिगम उपलब्धियाँ

- आत्मकथा की शैलीगत विशेषताएँ पहचानकर विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- हिंदीतर भाषी कविता की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- समकालीन कहानी की अवधारणा पाकर कहानी के पात्रों के चरित्र पर टिप्पणी लिखता है।
- कहानी के आशय का विश्लेषण करके विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- हाइकू कविता की विशेष शैली पहचानकर उसकी व्याख्या करता है।

- चित्र से क्या तात्पर्य है?
- अग्नि की उड़ान किस विधा की रचना है?

आत्मकथा में जीवन के अविस्मरणीय प्रसंगों का सच्चा चित्रण होता है। ऐसी एक आत्मकथा का मार्मिक प्रसंग पढ़ें।

ज़मीन एक स्लेट का नाम है

तीस अप्रैल को मेरी तदर्थ सेवा समाप्त कर दी गई और मैं बोरिया बिस्तर समेटकर अम्मा सहित बिलासपुर आ गया था। छोटा भाई गुड्डू लिवाने आया था ताकि सामान लाने में अकेले मुझे कठिनाई न हो। सामान लाना इसलिए ज़रूरी था कि अगले वर्ष पुनः साक्षात्कार में मैं चुन ही लिया जाऊँ - इसकी गारंटी नहीं थी। बिलासपूर के घर में ताला लगाकर सारा परिवार गाँव पहुँचा। अरसे के बाद गाँव के घर की लिपाई-पुताई की गई। बहुत दौड़-भाग के बाद

"कुछ और कीमत आ सकती थी मगर मजबूरी का फ़ायदा सभी उठाते हैं" इस कथन से क्या तात्पर्य है?

रजिस्ट्री के पहले पिताजी को खेत देखने की इच्छा हुई, क्यों?

ज़मीन का खरीदार मिला - बारह हज़ार प्रति एकड़ की दर से - जैसा कि अनुमान था। कुछ और कीमत आ सकती थी मगर मजबूरी का फ़ायदा सभी उठाते हैं। हमारे पास समय न था। शादी की तैयारियाँ शुरू करनी थीं। भविष्य निधि से भी कुछ हज़ार रुपए पिताजी निकाल लाए थे। दीदी बहुत भावुक हो गई थी और बात-बात में रो पड़ती थी। मंडप लगा दिया गया था। शादी के कार्ड छप गए। मेहमान आने लगे। हल्दी-तेल चढ़ाना शुरू हो गया। हम सब व्यवस्था से संतुष्ट थे पर मन जैसे अभी से खाली-खाली और उदास था। जो उपस्थित था उसकी अनुपस्थिति अभी से दिल में घर कर गई थी।

जिस दिन ज़मीन की रजिस्ट्री होनी थी, उसके एक दिन पहले पिताजी ने मुझे अपने साथ खेत चलने को कहा। घर में मेहमान थे और विवाह से संबंधित ज़रूरी काम भी। मैं इस अप्रत्याशित प्रस्ताव से कुछ चकित हुआ-

"एक दो दिन बाद कभी चलेंगे पिताजी। कुछ फुरसत में। अभी तो..."

"कल रजिस्ट्री के बाद वह ज़मीन अपनी कहाँ रह जाएगी। फिर दूसरों की ज़मीन में क्या जाना।" वे धीरे-से बोले। यह वाक्य मुझे आहत कर गया।

उनकी पीड़ा मैं समझ रहा था। मुझे खुद बहुत अच्छा नहीं लग रहा था। खेतों में पहुँचकर वे सूर्यास्त तक उन खेतों में टहलते रहे जो बिकनेवाले थे। वे खामोश थे। कुछ बोल नहीं रहे थे। मगर उनके भीतर का हाहाकार मेरी समझ में आ रहा था। मैंने झुककर मिट्टी को छुआ - चुपचाप - पिताजी के देखे बगैर। क्या जमीन एक स्लेट का नाम है जिसपर हमारे बचपन की कविता लिखी है? या शायद एक फूल का नाम जिसके रंग में हमारे रक्त की चमक है?

लेखक को अपनी ज़मीन एक स्लेट लगता है या फूल - क्यों?

अगले दिन रजिस्ट्री तक पिताजी खामोश रहे। बस "हूँ-हाँ" करते हुए। मेहमानों के सामने भी औपचारिकता निभाना कठिन हो गया था। कैश गिनकर ले लिया गया। पिताजी ने रजिस्ट्री के कागज़ात पर हस्ताक्षर कर दिए-

"मैं ज़मीन नहीं बेचता
बेचता हूँ हृदय
अपनी छाती से काटकर
जिसपर गिरकर छिले मेरे घुटने
उस धूल और इस रक्त का प्यार
मैं बेचता हूँ
बेचता हूँ पानी में डूबी
धान की जड़ों की गीली सुगंध
अपनी साँसों से छीनकर
मैं पेड़ की तरह कटकर गिरता हूँ
दुनिया के हाट में बेमोल
मेघ की तरह बरसकर होता हूँ खाली
मैं ज़मीन नहीं बेचता
बेचता हूँ आँखें
जल और स्वप्न से भरी हुई
अपनी दो अदद आँखें।"

बेटी के विदा होने में अभी दो-चार दिन वक्त था। मगर जमीन की विदाई आज ही हो रही थी। पिताजी के सूखे आँसुओं को कौन देख सकता था। कौन सुन सकता था उनके निःशब्द विलाप को।

- एकांत श्रीवास्तव

एकांत श्रीवास्तव हिंदी के जाने माने लेखक हैं। छत्तीसगढ़ के छुटा गाँव में सन् 1964 को उनका जन्म हुआ था। उनके तीन कविता-संग्रह निकले हैं। 'मेरे दिन मेरे वर्ष' उनकी आत्मरचना है। वे केदार सम्मान से सम्मानित हैं।

मेरी खोज

- अपनी मिट्टी के प्रति लेखक और उनके पिताजी की गहरी आस्था को सूचित करनेवाले वाक्य या वाक्यांश छाँटकर लिखें।

  जैसे:- जिस दिन ज़मीन की रजिस्ट्री होनी थी, उसके एक दिन पहले पिताजी ने मुझे अपने साथ खेत चलने को कहा।

- कवितांश पढ़ें।

  'मैं जमीन नहीं बेचता
  बेचता हूँ हृदय
  अपनी छाती से काटकर
  जिसपर गिरकर छिले मेरे घुटने
  उस धूल और इस रक्त का प्यार
  मैं बेचता हूँ।'

  - ज़मीन की तुलना हृदय से क्यों की गई है?
  - पाठभाग की कविता के लिए शीर्षक लिखें।

अनुवर्ती कार्य

- शादी की तैयारियाँ देखकर दीदी का मन संघर्ष से भरा। वह अपना संघर्ष डायरी में लिख रही है। वह डायरी लिखें।

  सहायक संकेत:-

  * भाई और माता-पिता का प्यार
  * परिवार से बिछुड़ने का दुख
  * परिवारवालों के लिए बोझ बनने की नियति
  * ससुराल के प्रति आशंका

- परिचर्चा चलाएँ और आलेख लिखें।

  आज के ज़माने में शादी के नाम पर आडंबर और दुर्व्यय बढ़ते जा रहे हैं। यह केवल पारिवारिक ही नहीं बल्कि एक सामाजिक समस्या बन गई है।

  सहायक संकेत:-

  * शादी - प्रेम का बंधन
  * शादी के नाम पर बढ़ता अनावश्यक खर्च
  * समाज में अपने बड़प्पन दिखाने की बुरी आदत
  * बढ़ती दहेजप्रथा
  * अमीरों की नकल

- 'बेटी के विदा होने में अभी दो-चार दिन था। मगर ज़मीन की विदाई आज ही हो रही थी। पिताजी के सूखे आँसुओं को कौन देख सकता था। कौन सुन सकता था उनके निःशब्द विलाप को !'

- यहाँ दो विदाइयाँ हो रही हैं - बेटी की और ज़मीन की। दोनों विदाइयों पर पिता दुखी हैं। इसके आधार पर पिता और बच्चों के बीच के अनमोल रिश्ते पर एक टिप्पणी लिखें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
प्रसंग का विश्लेषण किया है			
पिता और बच्चों के बीच का संबंध लिखा है			
अपना दृष्टिकोण लिखा है			

एक नज़र...

एकांत श्रीवास्तव ने अपने आत्मकथांश में ज़मीन बेचने को विवश पिता की पीड़ा को कविता का रूप दिया है। पिता के लिए वह ज़मीन सिर्फ एक ज़मीन नहीं थी, अपने हृदय का टुकड़ा था। रजिस्ट्री के कागज़ात पर हस्ताक्षर करते हुए पिता को मिट्टी की गीली सुगंध की याद आती है। छिले हुए घुटनों पर धूल और रक्त के मेल की याद आता है। उसे खुद लगता है कि इस व्यापारी जगत में वह कटकर गिरे हुए पेड़ के समान मूल्यहीन बन गया है। पिता को लगता है कि वे बरसात में बरसकर रीतनेवाले बादल की तरह नगण्य बन गए हैं और ज़मीन के नाम पर अपने सपनों से भरी दोनों आँखें बेच रहे हैं।

प्रसंगार्थ

तदर्थ	-	adhoc
अरसे	-	दीर्घकाल
लिपाई-पुताई	-	आलेपन
दर	-	मूल्य
मजबूरी	-	विवशता
भविष्य निधि	-	provident fund
हल्दी-तेल चढ़ाना	-	विवाह के कुछ दिन पहले वर और कन्या के शरीर पर हल्दी और तेल मिला उबटन लगाने की रस्म
घर करना	-	रहना, बसना
अप्रत्याशित	-	आकस्मिक
प्रस्ताव	-	सुझाव
फुरसत	-	अवसर
आहत	-	चोट खाया हुआ
टहलना	-	घूमना
बगैर	-	बिना
छिलना	-	ऊपरी चमड़ा अलग होना
घुटना	-	knee
दुनिया के हाट	-	दुनिया रूपी बाज़ार
बेमोल	-	मूल्यहीन
दो अदद आँखें	-	दोनों आँखें

सपना, सपना होता है। सपने की कोई भाषा नहीं होती, जाति नहीं होती, धनी-निर्धन का भेदभाव नहीं होता। पढ़ें, सपने पर एक कविता...

सपने का भी हक़ नहीं

इक कमरेवाली झोंपड़ी में
बच्चों के सो जाने पर
मैं अपनी मन-दीवार पर
अपना विस्तृत घर खींचने लगी।

खाने-पीने-सोने के
अलग-अलग कमरे,
रसोई यदि बैठक के
निकट रखती तो
पूजा का कमरा कहाँ होगा?

ऊपर की मंज़िल में
भगवान को बिठाने का
कमरा भी बन गया तो
मेरी समस्याएँ सभी दूर हो गईं।

कॉंक्रीट की छत के
नीचे पीले रंग की
दीवारों के मध्य में
खिड़की-दरवाज़े सब रख दिए।

संगमरमर की चमक
ज़मीन पर; उस चमक पर
चमकती मेज़-कुरसियाँ
टी.वी, होम थियेटर बैठक में भाते।

ग्रानाइट चमकती रसोई में
फ्रिड्ज और माइक्रोवेव के
साथ होने पर ज्यादा से
ज्यादा चमक औ,
शान में रहती रसोई।

मसहरी-सुरक्षा में
ज़मीन पर धूप के
फैलने तक नींद में
पड़ी मैं, मगर नींद के
खुलने के पूर्व ही नोटीस
बैंक की आ धमकी सपने में।

-डॉ जे बाबू

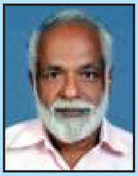

हिंदीतर प्रदेश के हिंदी साहित्यकारों में प्रमुख हैं डॉ जे बाबू। उनका जन्म केरल राज्य के तिरुवनंतपुरम में 1952 को हुआ। मुक्तधारा, उलझन और उलाहना उनकी कविताओं का संकलन है। बिपाशा अखिल भारतीय कहानी पुरस्कार और हिंदीतर भाषी लेखक पुरस्कार से वे सम्मानित हैं।

मेरी खोज

- 'मगर नींद के टूटने के पूर्व ही नोटीस बैंक की आ धमकी सपने में।' कवि यहाँ किस सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करते हैं?

अनुवर्ती कार्य

- कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।

एक नज़र...

एक कठोर सामाजिक सच्चाई को दिखानेवाली कविता है 'सपने का भी हक नहीं'। एक कमरेवाली झोंपड़ी में रहकर महल का सपना देखनेवाली मज़दूरिन का सपना कठोर यथार्थ पर टूट जाता है। उसे लगता है कि बैंक की नोटीस आ धमकती है। आगे सपना देखना भी उसके लिए डरावना बन जाता है।

प्रसंगार्थ

बैठक - drawing room
भाना - शोभा देना
शान - ठाट-बाट
मसहरी - मच्छरदानी

◆ स्त्री के चेहरे में कौन-सा भाव झलकता है?

हमारे समाज की बहुत सारी स्त्रियाँ ज़िंदगी के विभिन्न मोड़ों पर निरालंब जीवन जीने के लिए विवश बन जाती हैं। ऐसी एक नारी की कहानी पढ़ें।

मुरकी उर्फ़ बुलाकी

"माँ ! मुरकी का ब्याह कब हुआ था? मैंने तो कभी उसके पति को देखा नहीं?" लेटा हुआ कुमार चौंककर बैठ गया और कहने लगा, "मैं तो जब से पैदा हुआ हूँ, मुरकी को यहीं देखा है - अपने घर, इसी पिछली कोठरी में।"

"उस अभागी का भी ब्याह हुआ था। तू छोटा-सा था, चार वर्ष का।"

"और वह ससुराल गई थी?"

"ससुराल कहाँ था? न कोई जन्मने वाला और न कोई सहेजने वाला।"

"माँ, मुझे सारी बात सुना।"

न कोई जन्मने वाला और न कोई सहेजने वाला।" - मुरकी के बारे में माँ ऐसा क्यों कहती है?

“इसका बाप हमारे घर का बहुत पुराना नौकर था। तू जब पैदा हुआ, उसने मेरे आगे विनती की कि गाँव में उसकी स्त्री मर गई है, और उसकी लड़की वहीं चाचा के पास अकेली रहती है। अगर मैं मान जाऊँ तो वह अपनी लड़की को यहाँ ले आए। वह तुझे खिलाया करेगी और रोटी खा लिया करेगी...”

“फिर?”

“मैंने शुक्र किया कि मुझे हाथ का सहारा मिल जाएगा। वह लड़की को गाँव से ले आया। मुश्किल से बारह वर्ष की होगी तब। बड़ी मासूम-सी मातृहीन। मुझे बड़ी भली लगी। जब आई, इसने काली सलवार पहन रखी थी, शरीर पर हरे रंग का कुर्ता था। बदन से दुर्बल-सी, पर रंग बहुत सफ़ेद, नयन-नक्श भी सुंदर। कानों में चाँदी की मुरकियाँ (छल्ले) पहने थी, और नाक में सोने का छोटा-सा बुलाक।”

“फिर?” कुमार ने उत्सुकता से पूछा।

“तुझे तो वह अपने हाथों से नहीं खिलाती थी, अपनी जान से खिलाती थी। तू उसका पीछा नहीं छोड़ता था। कभी तू उसकी मुरकियों को मुट्ठी भर लेता था और कभी उछल-उछलकर उसके बुलाक को पकड़ता था। मैं प्यार से कभी उसको मुरकी बुलाती थी, कभी बुलाकी।”

“माँ, यह मुरकी और बुलाकी नाम तूने रखे थे?”

"हाँ, मैंने ही इसके नाम रखे थे... पर न जाने कौन-से वक्त रखे थे...?"

"क्यों?"

"वह जब बड़ी हुई - सोलह वर्षों की, सत्रह वर्षों की, उसको खूब रूप चढ़ गया। मैं दाँतों तले जीभ देकर कहती थी, री मुरकी! किसके कानों में पड़ेगी? और किसकी नाक में बुलाक की तरह चमकेगी?"

कुमार मुसकराया।

"बड़े सुंदर पहाड़ी गीत गाती थी। उड़ते पंछी भी खड़े हो जाते थे।"

"फिर?"

"इसके बाप ने अपने गाँव में कहीं इसका रिश्ता कर दिया। इन लोगों में लड़कियों के रुपए लेते हैं।"

"लड़का अच्छा था?"

"अच्छा किसलिए होना था - दूजा था।"

"दूजा क्या होता है, माँ?"

"जिसकी पहली पत्नी मर गई हो।"

"फिर तो उसकी बहुत उम्र होगी।"

"बहुत भी थी और उसमें और भी अवगुण थे। न जाने आँखों में कोई नुक्स था। मुझे पूरी तरह पता नहीं। पर था पैसेवाला, तभी तो उसने ज्यादा पैसे दिए थे।"

"फिर?"

"बाप ने जब बात पक्की की, यह रात ही रात में एक शहरी लड़के के साथ भाग गई।"

"वह कौन था?"

"मैंने तो देखा नहीं, पर खुद ही बताती थी; वह बड़ा छबीला लड़का था।"

"हमारे इसी शहर का ही होगा?"

"इसी शहर का, इसी बस्ती का। बड़े बाज़ार में जो होटल है, वहीं काम करता था, केक बनाता था।"

"फिर?"

"चार-छह महीने उसके साथ किसी शहर में रही। उसने घर बनाया। जो कुछ पास था, लगा दिया। मोटे-मोटे चाँदी के कड़े थे, गले में चाँदी की जंजीर थी। तेरी वर्षगाँठ पर मैंने इसको सोने की अंगूठी दी थी। एक बार बालियाँ दी थीं। उसने सब कुछ बेचकर घर की वस्तुएँ खरीदीं।"

"और फिर?"

"फिर कोई और स्त्री उसकी नज़र में बैठ गई। वह इसको किसी गाँव में दशहरे का मेला दिखाने के लिए ले गया और रात को सराय में सोई हुई के आँचल से घर की चाबी खोलकर ले गया। इसको वहीं सराय में ही छोड़ गया।"

कुमार ने अपना निचला होंठ अपने दाँतों में दबाया और फिर क्रुद्ध होकर कहने लगा,"इसने ढूँढ़ा नहीं उसको?"

शहरी लड़के ने मुरकी के प्यार का फायदा कैसे उठाया?

"कहती थी, मन के सौदे में जब उसका मन ही मुकर गया तो फिर तन को क्या ढूँढ़ना था? "

"कमाल की औरत थी।"

"एक बात इसने अच्छी की। किसी दयालु व्यक्ति से राह का भाड़ा लेकर लौट आई, नहीं तो न जाने कहाँ भटकती?"

"यहाँ हमारे घर आ गई?"

"हाँ यहीं हमारे घर। हमारे घर किसलिए, अपने घर, अपनी इसी कोठरी में। मैंने जिस दिन इसको यह कोठरी दी थी, इसके साथ वायदा किया था कि मैं अपने जीते-जी इसको कभी काम से जवाब नहीं दूँगी और न मेरा कुमार जवान होकर इसको कभी इस कोठरी से निकालेगा।"

कुमार की आँखों का पानी आँखों में ही रहा। राजवंती की आँखें छलक पड़ीं। दोनों ने मन की संवेदनाएँ भिन्न प्रकार से प्रकट कीं। क्यों?

कुमार का मन भर आया, पर वह मर्द था, उसकी आँखों का पानी आँखों में ही रहा। राजवंती की आँखें छलक पड़ीं।

"मैंने तुझे कहा था न - औरत की जात न जाने कैसी होती है। यह जब आई, इसका मुँह खोई हुई बछड़ी जैसा था। जब स्त्री के पास रहने को घर न हो..."

"माँ, तू बड़ी अच्छी है... अगर तेरी जगह कोई और औरत होती...?"

"मैंने कोई इसपर अहसान नहीं किया था कुमार, उसके काम का मोल चुकाया था। उसके रूप को

देखकर मैं कहती थी, मुरकी! किसके कान में पड़ेगी! जब मुरकी वापस आई, मुझसे कहने लगी, माँ ! मुझे किसीने कानों में पहना था। पर फिर उसके कान फट गए, क्या जाने मेरा बोझ ही ज़्यादा हो।"

कुमार की आँखें भर आईं - शायद मर्द जात की कोई लाज रखने के लिए !

"माँ, इसीलिए तुमने मेरी इस वर्षगाँठ पर मुझसे प्रण लिया था कि मैं मुरकी को उसके जीते-जी कभी इस कोठरी में से नहीं निकालूँगा ?"

"हाँ, कुमार ! इसलिए मैंने तुझसे प्रण लिया था। उसके मर्द ने जब उसके घर की चाबी उसके पल्ले से खोल ली थी, मैंने इस कोठरी की चाबी उसको पकड़ाते हुए कहा था कि मेरे जीते-जी कभी कोई तुझसे यह चाबी नहीं छीनेगा। और कुमार ! आज जब मैंने उसकी मरी को नहलाया, इस कोठरी की चाबी उसके नेफ़े में खोंसी हुई थी। उसके माँस से चिपक गई थी। इस चाबी ने उसकी देह पर जख्म कर दिया था, पर उसने जीते-जी इस चाबी को अपने माँस से नहीं उतारा। मुरकी... बुलाकी एक औरत..."

राजवंती ऐसे रोई जैसे उसकी आँखों में मुरकी के आँसू मिले हुए थे, और सिर्फ मुरकी के नहीं, सारी औरत जाति के आँसू मिले हुए थे।

-अमृता प्रीतम

'शायद मर्द जात की कोई लाज रखने के लिए!' कुमार के चरित्र की कौन-सी विशेषता यहाँ प्रकट होती है?

पंजाबी और हिंदी की विख्यात लेखिका अमृता प्रीतम ने उपन्यास, कहानी, कविता, संस्मरण एवं आत्मकथा के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई। पंजाब के गुजरांवाला में 1919 को उनका जन्म हुआ। देशी और विदेशी भाषाओं में उनकी रचनाओं का अनुवाद हुआ था। 1982 के ज्ञानपीठ पुरस्कार से वे सम्मानित हुईं। 'कहानियों के आँगन में', 'कहानियाँ जो कहानियाँ नहीं हैं' आदि उनके चर्चित कहानी-संग्रह हैं। 2005 को उनकी मृत्यु हुई।

मेरी खोज

➤ **सही मिलान करें।**

जान से खिलाना	-	सौंदर्य बढ़ जाना
रूप चढ़ जाना	-	किसके जीवनसाथी बनेगी
दाँतों तले जीभ देना	-	प्रेम से भोजन देना
किसके कानों में पड़ेगी	-	चकित होना
नाक में चमकना	-	नाराज़ होना
नज़र में बैठना	-	मूल्य लौटा देना
दाँतों में होंठ दबाना	-	रोना
मोल चुकाना	-	शोभा बढ़ाना
आँखें भर आना	-	आकर्षण में आना

अनुवर्ती कार्य

- ये कथन पढ़ें।

  * मैं प्यार से उसको मुरकी बुलाती थी कभी बुलाकी।
  * री मुरकी ! किसके कानों में पड़ेगी और किसकी नाक में बुलाक की तरह चमकेगी?
  * किसी दयालु व्यक्ति से राह का भाड़ा लेकर लौट आई, नहीं तो न जाने कहाँ भटकती।
  * मेरे जीते जी कभी कोई तुझसे यह चाबी नहीं छीनेगा।

- इन कथनों के आधार पर राजवंती के चरित्र पर टिप्पणी लिखें।

- पति द्वारा उपेक्षित होने पर मुरकी किसी दयालु व्यक्ति से भाड़ा लेकर राजवंती के यहाँ आती है। वहाँ मुरकी और राजवंती के बीच का संभावित वार्तालाप तैयार करें।

- पति द्वारा उपेक्षित बुलाकी को राजंवती अपने यहाँ आश्रय देती है। संकेतों के आधार पर बुलाकी का आत्मकथांश तैयार करें।

सहायक संकेत :

* राजंवती के यहाँ आश्रय मिलना।
* राजंवती द्वारा कोठरी की चाबी पकड़ा जाना।
* जीवन भर चाबी न छीनने का वादा मिलना।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
अनुभवों का वर्णन है			
आत्मसंघर्ष की अभिव्यक्ति है			
संवेदना की अनुभूति है			
आत्मकथात्मक शैली है			

प्रसंगार्थ

मुरकी	-	छल्ला, ear ring
उर्फ़	-	उपनाम, पुकारने का नाम
सहेजना	-	संभालना
शुक्र करना	-	धन्यवाद देना
मासूम	-	निर्दोष
नक्श	-	आकृति
बुलाक	-	नथनी
मुट्ठी भरना	-	पकड़ना
दूजा	-	दूसरा
नुक्स	-	खराबी
छबीला	-	सुंदर
बस्ती	-	बसने का स्थान
मुरकी, बुलाकी	-	कहानी में छबीली लड़की का नाम

चाँदी के कड़े	-	चाँदी के कंकण
चाँदी की जंजीर	-	silver chain
वर्षगाँठ	-	जन्मदिन
अंगूठी	-	ऊँगली में पहनने का गहना
बाली	-	सोने या चाँदी के तार का छल्ला, ear ring
सराय	-	मुसाफ़िरखाना, inn
सौदा	-	समझौता, खरीद-बेची
मुकरना	-	इनकार करना
भाड़ा	-	यात्रा का खर्च
मोल चुकाना	-	कीमत चुकाना
वायदा	-	वादा
अहसान	-	एहसान, उपकार
बोझ	-	भार, burden
पल्ला	-	वस्त्रांचल
छीनना	-	हड़पना
नेफ़ा	-	लहंगा, पाजामा आदि का वह ऊपरी भाग जिसमें इज़ारबंद (नाड़ा) पिरोया जाता है।
खोंसना	-	घुसेड़ना, to insert
चिपकना	-	एक चीज़ का दूसरी से जुड़ जाना
जख्म	-	चोट

एक बीज सारी धरती को हरा कर सकता है ।

'जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि'

\- सुई का काम सुई ही कर सकता है। छोटे होने से महत्व कम नहीं होता ।

एक छोटे-से बीज के भीतर एक बड़ा वृक्ष सुप्तावस्था में रहता है। कविता छोटी हो या बड़ी, उसकी संवेदना के अनुसार उसे नापना चाहिए। जापानी लघु कविता हाइकू आज हिंदी में भी लिखी जाती है। अब हाइकू का आस्वादन करें...

हाइकू

नभ गुँजाती
नीड़ गिरे शिशु पै
मँडराती माँ

भादों सरसे
पर विरहिणी का
सूखा आँगन।

मान न मान
मैं तेरा मेहमान
बने बुढ़ापा।

धन्य है वर्षा
खेतों में कविताएँ
बोते किसान

जब भी कोई
फूल खिला बाग में
तू याद आया।

जिन्हें न होता
दर्द का अहसास
आँसू ओस हैं।

-डॉ भगवतशरण अग्रवाल

हाइकू मूल रूप से जापानी कविता-रूप है। हाइकू का जन्म जापानी संस्कृति की परंपरा, जापानी जनमानस और सौंदर्य चेतना में हुआ और वहीं पला। आज हाइकू जापानी साहित्य की सीमाओं को लाँघकर विश्व साहित्य की निधि बन चुका है। हाइकू कविता तीन पंक्तियों में लिखी जाती है। हिंदी हाइकू में पहली पंक्ति में 5, दूसरी में 7 और तीसरी पंक्ति में 5 अक्षर के क्रम से कुल 17 अक्षर होते हैं।

भगवतशरण अग्रवाल का जन्म 1930 को उत्तरप्रदेश के बरेली में हुआ। वे गुजरात विश्वविद्यालय के निदेशक थे। हिंदी काव्य-जगत में हाइकू को एक अलग पहचान दिलाने में उनका काफी योगदान रहा। अपनी साहित्य सेवा के लिए वे अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित हैं। 'इंद्रधनुष' उनका प्रमुख हाइकू संग्रह है।

मेरी खोज

- हरेक हाइकू का मूलभाव क्या है ?

अनुवर्ती कार्य

- प्रत्येक हाइकू की आस्वादन-टिप्पणी तैयार करें।
- हाइकू कविताओं का संकलन करें।

  सहायक-संकेत: www.anubhuti-hindi.org
  www.hindihaiku.wordpress.com

प्रसंगार्थ

मँडराना - चारों ओर घूमना
भादों - भाद्रपद महीना
सरसे - शोभित हुए
ओस - हिमकण

एक नज़र...

- प्रकृति के प्रकोपों के कारण कभी पेड़ों से नीड़ नीचे गिरते हैं। परंतु नीचे गिरे बच्चों को छोड़कर उनकी माँ भाग नहीं जाती। माँ की ममता अतुलनीय है।
- विरहिणी की जीवनगाथा आहों और पीड़ाओं की है। पति के दूर होने से सुख भरे मौसमों में भी उसका मन हमेशा सूखा-रूखा रहता है।
- हर व्यक्ति बुढ़ापे को अपना दुश्मन मानता है । परंतु परिवर्तन प्रकृति का नियम है। हरेक को उसे स्वीकारना पड़ेगा।
- वर्षा जीवनदाता है। तन-तोड़ मेहनत करके खेतों में नए जीवन की कविताएँ खिलाने या बोनेवाले किसान के कारण वह धन्य हो जाती है।
- प्रेम कभी नहीं मुरझाता है। प्रेमी-प्रेमिका के दिल में हमेशा यादें हरा रहती हैं।
- वेदना मन को पवित्र बनाती है। वेदना के कारण ख़ुशी और प्यार का महत्व बनता है। जो इसे पहचानता नहीं, उसके सामने आँसू का कोई मूल्य नहीं होता।

जिस समाज में औरत का सम्मान नहीं होता, उस समाज का शीघ्र पतन निश्चित है।

इकाई चार

बुझा दीपक जला दो

चौथी इकाई है 'बुझा दीपक जला दो'। दूसरों का उपकार करते हुए हमें पूरा सुख तब मिलता है जब हमारा कर्म स्वार्थता से परे हो। हम सब दूसरों का उपकार करना तो चाहते हैं, पर साहस के अभाव में हम कुछ कर नहीं पाते। मलयालम के विख्यात कवि ओ.एन.वी. कुरुप की कविता का हिंदी अनुवाद 'कुमुद फूल बेचनेवाली लड़की' इकाई का पहला पाठ है। इसमें भगवान पर फूल चढ़ाने का पैसा फूल बेचनेवाली लड़की की भूख मिटाने को देनेवाला भक्त मानवता का अनोखा रूप प्रस्तुत करता है। अपनी गाड़ी में दिल्ली के रास्ते पर प्यासे-तड़पे लोगों को अपने ही खर्च से पानी पिलानेवाला गाड़ीचालक दूसरे पाठ में हमें आश्चर्य में डाल देता है। इकाई का तीसरा पाठ 'आदमी का चेहरा' नामक कविता है। छोटी-सी कविता में अपने सामान उठानेवाले कुली को लंबे अरसे के बाद इनसान के रूप में पहचाननेवाला व्यक्ति एक अनमोल संदेश दे रहा है। अंतिम पाठ एक व्यंग्य है जो जीवन की अस्थिरता की याद दिलाता है। संक्षेप में इकाई परोपकार और मानवता का संदेश देती है।

कुमुद फूल बेचनेवाली लड़की

वह भटका हुआ पीर

आदमी का चेहरा

दवा

अधिगम उपलब्धियाँ

- अनूदित कविता के आशय का विश्लेषण करके आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- संस्मरण की शैलीगत विशेषताओं से अवगत होकर विभिन्न प्रसंगों का विधांतरण करता है।
- समकालीन कविता की विशेषताएँ पहचानकर आस्वादन-टिप्पणी लिखता है।
- व्यंग्य की प्रासंगिकता पहचानकर आस्वादन करता है और टिप्पणी लिखता है।
- व्यंग्य के आशय का विश्लेषण करके प्रसंगों का विधांतरण करता है ।
- विभिन्न सामाजिक विषयों की अवधारणा पाकर उसे 'स्किट' के रूप में प्रस्तुत करता है।

रवींद्रनाथ टैगोर की एक उत्कृष्ट काव्यकृति है 'गीतांजलि'। गीतांजलि की रचना बंगाली भाषा में हुई है। बाद में टैगोर ने ही उसका अनुवाद अंग्रेज़ी में किया। हिंदी में तथा अन्यान्य भारतीय भाषाओं में भी उसका अनुवाद हुआ। पूरे विश्व में उसकी ख्याति फैल गई। साहित्यिक अनुवाद के माध्यम से एक भाषा-भाषी जनता की संस्कृति एवं साहित्य का प्रचार दूसरी भाषा-भाषी जनता तक आसानी से हो जाता है। पढ़ें, मलयालम की एक कविता का हिंदी अनुवाद...

कुमुद फूल बेचनेवाली लड़की

पुराना देवालय,
उसके निकट है कुमुद-सरोवर
रास्ते में पूजा-द्रव्य
बेचनेवालों के कितने ही दल;

'इधर इष्टदेव का
इष्ट नैवेद्य है कुमुद फूल'
मार्गदर्शी ज्यों
यों कहकर किसी कोने में,
मृत जल-साँप ज्यों
लटके लंबे डंठलों के
छोरों पर खिले

श्वेत कुमुद फूल बेचनेवालियाँ,
'मेरे हाथ से, मेरे हाथ से।'
मेरे सम्मुख आकर
बोली कोई लड़की
मुरझाए फूल की डंठल-ज्यों।

दीन स्वर में प्रार्थना करती
उसके हाथों में रख दिया
मैंने एक छोटा सिक्का-
फूल का दाम।

मेरी ओर बढ़ाते फूल और
उसके मुखड़े दोनों को देखा मैंने
हाय ! मुरझा रहे
दो सुरम्य सुकोमल रुप !

'हे फूल, तू अन्न है इस छोटी बहन के लिए
इससे बढ़कर पुण्य भला क्या है!
तुझे चढ़ाकर भला अब
क्या पाऊँ मैं...!'

खाली हाथ,
आगे बढ़ जाता हूँ मैं
'मेरे हाथ से, मेरे हाथ से'
का दीन स्वर धीमा होता जाता है...।

- ओ एन वी कुरुप

कवि एक बार गोवा के प्रसिद्ध 'श्री मंगेश मंदिर' गए थे। वहाँ की एक घटना के आधार पर यह कविता लिखी गई है।

ओ एन वी कुरुप मलयालम के लोकप्रिय कवि हैं। उनका जन्म 1931 को केरल प्रांत के कोल्लम के चवरा नामक गाँव में हुआ। दाहिक्कुन्न पानपात्रं, माट्टुविन् चट्टंङ्ले, भूमिक्कु ओरु चरमगीतं आदि उनके प्रसिद्ध कविता-संग्रह हैं। 2007 के ज्ञानपीठ पुरस्कार और 2011 के पद्मविभूषण पुरस्कार से वे सम्मानित हैं।

मेरी खोज

- कविता के निम्नलिखित वाक्यांश किससे संबंधित हैं? - कुमुद से या लड़की से।
  - इष्टदेव का इष्ट नैवेद्य
  - लंबे डंठलों के छोरों पर खिले
  - मुरझाए फूल की डंठल-ज्यों लड़की
  - दीन स्वर में प्रार्थना करती
- लटके हुए लंबे डंठलों की तुलना किससे की गई है ?
- 'हाय ! मुरझा रहे दो सुरम्य सुकोमल रूप'- कौन-कौन-से हैं ?

अनुवर्ती कार्य

- कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।
- वर्तमान सामाजिक परिस्थिति में उपर्युक्त कविता की प्रासंगिकता पर चर्चा करके टिप्पणी तैयार करें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
विषय की प्रासंगिकता पर चर्चा की है			
अपने दृष्टिकोण का समर्थन किया है			
क्रमबद्धता है			
निर्णय पर पहुँचा है			

एक नज़र...

कविता में फूल बेचनेवाली एक गरीब लड़की की बेबसी का चित्रण है। मंदिर में आराधना के लिए आनेवाला भक्त कुमुद फूल बेचनेवाली लड़की को देखता है और लड़की की हालत उसे दुबारा सोचने को विवश करता है। फूल का पैसा लड़की को देकर आगे निकलनेवाला भक्त मानवता का प्रतिरूप बन जाता है। ओ.एन.वी कुरुप की कविता का अनुवाद हिंदी की ख्यातिप्राप्त अनुवादिका एवं लेखिका डॉ एस तंकमणि अम्मा ने किया है।

हिंदी मौलिक लेखन तथा अनुवाद के क्षेत्र में डॉ एस तंकमणि अम्मा की अलग पहचान है। उनका जन्म 1950 को तिरुवनंतपुरम में हुआ था। गोत्रयान, स्वयंवर, लीला, एक धरती एक आसमान एक सूरज आदि उनकी अनूदित काव्य-रचनाएँ हैं। राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, सौहार्द पुरस्कार, द्विवागीश पुरस्कार आदि से वे सम्मानित हैं।

प्रसंगार्थ

कुमुद फूल	-	कुमुदिनी, water lilly
डंठल	-	डंडी, stem
छोर	-	नोक, edge
मार्गदर्शी	-	मार्गदर्शक, guide
मुखड़ा	-	चेहरा
चढ़ाना	-	समर्पित करना

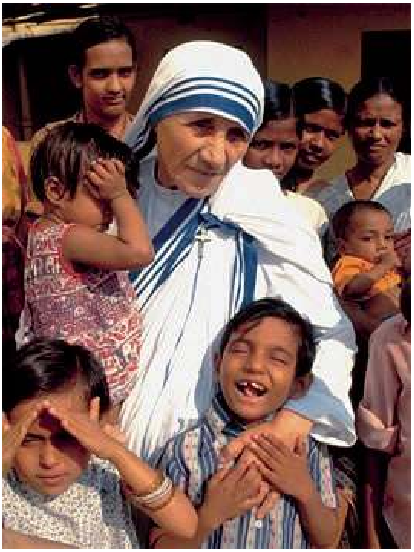

‘तरुवर फल नहीं खात है,
सरवर पियत न पान’
- रहीम

- चित्र और रहीम की पंक्तियों से कौन-सा संदेश मिलता है ?

ज़िंदगी में सबसे श्रेष्ठ कर्म परोपकार ही है। बेसहारे को सहारा देते हुए हम मानव से महामानव बनते हैं। जलती दुपहरी में दिल्ली की सड़कों पर प्यासों की प्यास बुझानेवाले एक साधारण व्यक्ति से संबंधित यह संस्मरण पढ़ें...

वह भटका हुआ पीर

जब-जब मेरे घर-आँगन में ‘गुलमोहर’ खिलता है, तो मुझे भटके हुए पीर की याद आ जाती है, जो पग-पग पर खड़ा होकर प्यासों को पानी पिलाता है। चटख गुलमोहर की तरह चटख गर्मी की उस दोपहर में आँचल का छाता लिए जब मैं एक पटरी पर खड़ी होकर स्कूटर का इंतजार कर रही थीं, तो मेरे पास एक स्कूटरवाला आकर खड़ा हो गया, मेरे कानों में

दिल्ली में तीन पहिएवाली गाड़ी को स्कूटर पुकारता है।

एक आवाज गूँजी,‘कहाँ जाइएगा।’ पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि किसी चालक की आवाज़ इतनी मधुर भी हो सकती है ? मुझे जिस दिशा की ओर जाना था, उसे बताया तो उसने ‘हाँ’ की मुद्रा में सिर हिलाकर कहा ‘बैठिएगा।’ इस करख़्ती भरी दुनिया में जब करख़्त आवाज़ें ही सुनाई देती हों, और एक ही आवाज़ मिश्री घुली हो, तो अचरज तो होता ही है। एकाध किलोमीटर आगे जाकर उसने स्कूटर रोककर राहगीरों से पूछना शुरु किया, ‘पानी पिएँगे’, और वह अंजरियों में मशक से पानी उँडेलता लोगों की प्यास बुझाता और आगे बढ़ जाता। विकास मार्ग से पार्लियामेंट स्ट्रीट तक जाते-जाते उसने दर्जनों बार स्कूटर रोककर राहगीरों को पानी पिलाया। खास बात यह है कि पानी की रेहड़ी से उसने दो बार मशक भरवाया और पैसे अदा किए। मैं सोच में डूब गई कि कैसा स्कूटरवाला है, जिसके सामने प्यासे अपने आप आ जाते हैं? शायद वह एक गहरे कुँएँ की माफिक होगा, जिसके दिल में प्यार बसता है। बाद में पता चला कि उसका नाम ही ‘मशकवाला स्कूटर’ पड़ गया। सवारी और चालक के रिश्ते, पता ही नहीं चलता कि कब मधुर हो जाते। जब घर के

लाल फूलोंवाला पेड़ है ‘गुलमोहर।’ भरी गर्मियों में गुलमोहर के पेड़ पर पत्तियाँ तो नाममात्र होती हैं, परंतु फूल इतने अधिक होते हैं कि गिनना कठिन। वसंत से गर्मी तक गुलमोहर अपने ऊपर लाल नारंगी रंग के चादर ओढ़े भीषण गर्मी सहता देखनेवालों की आँखों में ठंडक का अहसास देता है।

बड़े बुजुर्गों को कोई पानी नहीं पिलाता और पानी माँगने पर अँगारों जैसी जलती आँखें दिखाई जाती हों, तो यह स्कूटरवाला तो पीर जैसा लगेगा ही न। गर्मी की एक साँझ में वह मेरे गेट के सामने खड़ा होकर मुझसे पूछ रहा था, 'पानी पिएँगी? अभी भरवा कर ला रहा हूँ।' 'हाँ-हाँ, क्यों नहीं।' मैंने उसे बरामदे में बिठाया और उससे कुशलक्षेम पूछने लगी। वह पितृविहिन बालक स्ट्रीट लाइट में बैठकर अखबार पढ़ता, स्कूटर चलाकर माँ और अपने लिए दो जून रोटी का जुगाड़ करता। बेबे कहती, 'तू पानी पिलाया कर, पुण्य मिलता है। तब से अब तक इस मशक से मेरा रिश्ता जुड़ा हुआ है। मुझे तो पुण्य मिल ही गया। लाखों लोगों की दुआओं से मैं ग्रेजुएट हो गया। घर बैठे नौकरी चलकर आई, लेकिन मुझे पानी पिलाने में जो सुख मिलता है, वह नौकरी में कहाँ ! अपने मन के बादशाह। जहाँ मर्जी स्कूटर रोक लो और जहाँ मर्जी चल दो। आप जैसे लोग जब स्कूटर में बैठते हैं, तो मुझे बेहद सुकून मिलता है। मुझे लगा कि वह आम आदमी न होकर एक भटका हुआ पीर है, जो आपा-धापी की दुनिया में खुशी बाँटता फिर रहा है। वह पूजा के लिए कहीं भी न बैठकर लोगों के दिल में जगह बनाता है। दिल के रिश्ते जोड़ता है। क्या आपने भी कभी इस भटके हुए पीर से मुलाकात की है?

- राज बुद्धिराजा

लेखिका को स्कूटरवाला पीर जैसा लगा, क्यों ?

वह पूजा के लिए कहीं भी न बैठकर लोगों के दिल में जगह बनाता है- इस वाक्य का क्या तात्पर्य है ?

डॉ राज बुद्धिराजा ने हिंदी की लगभग सभी विधाओं में अपनी क्षमता दिखाई। उनका जन्म लाहौर में 1937 को हुआ था। उन्होंने लगभग तीन सौ संस्मरण लिखे हैं। सफर की यादें, साकूरा के देश में, दिल्ली अतीत के झरोखे से, हाशिए पर दिल्ली आदि आपके संस्मरणों के संग्रह हैं। जापान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से वे सम्मानित हैं।

मेरी खोज

- लेखिका ने स्कूटरवाले की तुलना गुलमोहर से क्यों की है ?
- स्कूटरवाला कैसे अपने मन का बादशाह बन गया ?

अनुवर्ती कार्य

- 'मशकवाला स्कूटर' के बारे में अखबार में एक विशेष समाचार छापा जाता है। वह किस प्रकार होगा?

सहायक संकेत:

* माँ का उपदेश
* राहगीरों को पानी पिलाना
* गरीबी में जीवन बिताना
* दिल के रिश्ते जोड़ना

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
समाचार में संक्षेप में पूरी घटना का विवरण है			
समाचार के अनुकूल भाषा है			
समाचार की शैली है			
शीर्षक समाचार पढ़ने की प्रेरणा देनेवाला है			

- स्कूटरवाले के चरित्र पर टिप्पणी करते हुए वर्तमान समाज में ऐसे लोगों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।
- स्कूटरवाला जैसे लोगों को आपने देखा है? वह अनुभव प्रस्तुत करें।

प्रसंगार्थ

भटकना	-	व्यर्थ घूमना, to wander
पीर	-	संत, Saint
चटख़ गुलमोहर	-	खिला हुआ गुलमोहर
चटख़ गर्मी	-	फैली हुई गर्मी
छाता	-	छतरी
पटरी	-	सड़क के किनारे की पैदल चलने की पतली जगह, footpath

चालक	-	गाड़ी चलानेवाला, driver
करख्ती	-	कलंक
करख्त	-	कलंकित
मिश्री	-	चीनी की एक मिठाई, sugar candy
अचरज	-	आश्चर्य
राहगीर	-	यात्री
अंजरी	-	अंजुली
मशक	-	पानी का थैला
पानी उंडेलना	-	to pour water
रेहड़ी	-	ठेला
माफिक	-	अनुसार
दो जून	-	दो बार
बेबा	-	विधवा
सुकून	-	संतोष
आपा-धापी	-	दौड़-धूप

‘श्रम तो एक पूजा है,
जिसमें ना कोई ऊँचा
और ना कोई नीचा है।’

हमारे देश का विकास तन-तोड़ मेहनत करनेवाले मज़दूर, किसान, कर्मचारी आदि पर निर्भर है। पर कभी-कभी हम राष्ट्र के उत्थान में उनकी भूमिका को भूल जाते हैं। उसकी याद दिलानेवाली एक कविता पढ़ें...

आदमी का चेहरा

“कुली !” पुकारते ही
कोई मेरे अंदर चौंका। एक आदमी
आकर खड़ा हो गया मेरे पास।
सामान सिर पर लादे
मेरे स्वाभिमान से दस क़दम आगे
बढ़ने लगा वह
जो कितनी ही यात्राओं में
ढो चुका था मेरा सामान।
मैंने उसके चेहरे से उसे
कभी नहीं पहचाना,
केवल उस नंबर से जाना
जो उसकी लाल कमीज़ पर टँका होता।
आज जब अपना सामान खुद उठाया
एक आदमी का चेहरा याद आया।

-कुँवर नारायण

कुँवर नारायण का जन्म उत्तर प्रदेश के फैज़ाबाद में 1927 को हुआ। अज्ञेय द्वारा संपादित 'तीसरा सप्तक' के प्रमुख कवि कुँवर नारायण नई कविता आंदोलन के सशक्त हस्ताक्षर हैं। कविता के अलावा कहानी, समीक्षा और सिनेमा में उन्होंने लेखनी चलाई। चक्रव्यूह, अपने सामने, कोई दूसरा नहीं, इन दिनों आदि उनके प्रमुख काव्य संग्रह हैं। देश के सर्वोच्च साहित्य पुरस्कार ज्ञानपीठ से 2005 में वे सम्मानित हुए।

मेरी खोज

- कुली को आदमी के रूप में पहचानने से पहले कुली के साथ कवि की यात्रा कैसी थी ?
- कुली को आदमी मानने के पहले कवि ने उसको किस रूप में पहचाना था ?
- सामान खुद उठाते वक्त कवि के दिमाग में कौन-सा विवेक पैदा हुआ?
- कुली कहकर पुकारने पर कवि को क्यों लगता है कि कुली नहीं एक इनसान आकर उसके पास खड़ा हो गया है?

अनुवर्ती कार्य

- कविता की आस्वादन-टिप्पणी लिखें।
- संगोष्ठी चलाएँ:-

विषय :- किसी काम-धंधे का महत्व केवल उस काम पर निर्भर नहीं होता बल्कि काम करनेवाले की ईमानदारी पर भी निर्भर होता है।

एक नज़र...

आज कवि ने अपना माल खुद उठाया।

↓

कवि ने माल ढोने का दर्द पहचान लिया।

↓

'कुली' पुकारने पर एक आदमी कवि के पास आकर खड़ा हो गया।

↓

पहले जब कुली माल उठाता था तब कवि उससे दस कदम पीछे चलता था।

↓

कवि को लगता था कि वह 'कुली' से हर हाल में श्रेष्ठ है।

↓

उन यात्राओं में कभी भी कुली के चेहरे की पहचान कवि को नहीं थी।

↓

उन यात्राओं में केवल उसकी लाल कमीज़ पर टंके नंबर से ही उसे पहचाना था।

प्रसंगार्थ

चौंकना	-	चकित होना
लादना	-	बोझ उठाना
ढोना	-	लादना
टँकाना	-	सिलवाना

व्यंग्य में केवल हँसी नहीं होती, वह पाठक को ज़रा सोचने के लिए विवश बना देता है। उसमें सच्चाई किसी-न-किसी रूप में छिपी रहती है। पढ़ें, एक छोटा-सा व्यंग्य...

दवा

कवि 'अनंग' जी का अंतिम क्षण आ पहुँचा था। डॉक्टरों ने कह दिया कि ये अधिक-से-अधिक घंटे-भर के मेहमान हैं। अनंग जी की पत्नी ने कहा कि कुछ ऐसी दवा दे दें, जिससे ये 5-6 घंटे जीवित रह सकें ताकि शाम की गाड़ी से आनेवाले बेटे से मिल लें। डॉक्टरों ने कहा कि कोई भी दवा इन्हें घंटे-भर से अधिक जीवित नहीं रख सकती।

इसी समय अनंग जी के मित्र आए। वे बोले, "मैं इन्हें मजे में कई घंटे जीवित रख सकता हूँ।"

डॉक्टरों ने हँसकर कहा, "यह असंभव है।"

मित्र ने कहा, "खैर, मुझे कोशिश तो कर लेने दीजिए। आप सब लोग बाहर हो जाइए।"

सब बाहर चले गए। मित्र अनंग जी के पास बैठे और बोले, "अनंग जी, अब तो आप सदा के लिए चले। यह सुललित कंठ अब कहाँ सुनने को मिलेगा! जाते-जाते कुछ सुना जाइए !"

यह सुनते ही अनंग जी उठकर बैठ गए और बोले, "मन तो नहीं है पर आपकी प्रार्थना टाली भी नहीं जा सकती। अच्छा, अलमारी में से मेरी कॉपी निकालिए न।"

मित्र ने कॉपी उठाकर हाथ में दे दी और अनंग जी कविता-पाठ करने लगे। घंटे-पर-घंटे बीतते गए। शाम की गाड़ी आ गई और लड़का भी आ गया। उसने कमरे में घुसते ही देखा कि पिताजी कविता पढ़ रहे हैं और उनके मित्र मरे पड़े हैं।

-हरिशंकर परसाई

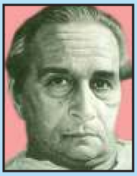

हरिशंकर परसाई का जन्म 1924 को मध्यप्रदेश में हुआ था। वे हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंग्यकार थे। वे हिंदी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और हल्के-फुल्के मनोरंजन की परंपरागत परिधि से उबारकर समाज के व्यापक प्रश्नों से जोड़ा। 'हँसते हैं रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे' आदि उनके श्रेष्ठ कहानी संग्रह हैं। उनकी मृत्यु 1995 को हुई।

मेरी खोज

- **निम्नलिखित कथन किन-किन पात्रों के हैं ?**
  - "कुछ ऐसी दवा दे दें, जिससे ये 5-6 घंटे जीवित रह सकें।"
  - "मैं इन्हें मज़े में कई घंटे जीवित रख सकता हूँ।।"
  - "जाते-जाते कुछ सुना जाइए।"
  - "आपकी प्रार्थना टाली भी नहीं जा सकती।"
- मित्र की बात सुनते ही अनंग जी उठकर बैठ गए। इनमें कौन-सा व्यंग्य है?

अनुवर्ती कार्य

- कवि अनंग के नए कविता-संग्रह का प्रकाशन हुआ है। कविता-संग्रह की बिक्री बढ़ाने के लिए एक विज्ञापन तैयार करें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
सपाट भाषा का प्रयोग है			
मुहावरेदार / नारेबाज़ी शैली है			
लाभ और गुणवत्ता का जिक्र है			
रूपरेखा आकर्षक है			

➤ कहानी के आधार पर निम्नलिखित तीन प्रसंगों के संवाद आगे बढ़ाएँ।

पात्र

पत्नी और डॉक्टर

पत्नी : अरे डॉक्टर साहब ! इनको एक्स्टेंशन मिलेगा क्या?
डॉक्टर : नहीं, इनको बचाना मुश्किल है।
.... : ....
.... : ....
.... : ....

पात्र

मित्र, पत्नी और डॉक्टर

मित्र : कैसे हैं मेरे दोस्त?
पत्नी : डाक्टर का कहना है इनका बचना मुश्किल है।
डॉक्टर : मुश्किल नहीं, असंभव है।
.... : ....
.... : ....
.... : ....

पात्र

कवि और मित्र

मित्र : अरे यार ! मैं पहुँच गया हूँ।

कवि : मित्र, मैं मर जाऊँगा क्या?

.... : ....

.... : ....

.... : ....

- तीनों संवादों के आधार पर कहानी को स्किट के रूप में प्रस्तुत करें।

निजी परख

	पूर्ण	आंशिक	अपूर्ण
प्रस्तुति में सहजता			
प्रसंगानुकूल अभिनय			
संवाद में प्रवाह			
विषयानुकूल रुपायन			

ज़िदगी में आप कितने खुश हैं यह महत्वपूर्ण नहीं है! बल्कि, महत्वपूर्ण यह है कि आपके कारण कितने लोग खुश हैं।

अतिरिक्त वाचन सामग्री

यह पाठ्यपुस्तक हिंदी के
विभिन्न साहित्यिक एवं व्यावहारिक
विधाओं की संगम स्थली है।
विधाओं को समझने के समान
विधाओं के बारे में समझना भी
महत्वपूर्ण है। चाहे पहले से ही
आप इनके जानकार हों,
एक झलक यहाँ भी दी गई है।
अधिक जानने के लिए
सूचना प्रौद्योगिकी तथा
अंतर्जाल की मदद लें।

द्विवेदीयुगीन कविता

द्विवेदी युग में काव्य भाषा के रूप में खड़ीबोली को प्रौढ़ता मिली। इस युग में खड़ीबोली को परिमार्जित करने में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा उनके द्वारा संपादित सरस्वती पत्रिका की विशेष भूमिका है। द्विवेदीयुगीन कविता राष्ट्रीयता तथा समाज-सुधार की भावनाओं से प्रेरित रही। वीरता, त्याग एवं उदारता की भावनाएँ कविताओं में मुखरित हुईं। रचनाओं में देशभक्ति, मानवतावाद तथा स्वच्छंद प्रकृति-चित्रण की प्रधानता दिखाई पड़ी। हरिऔध द्वारा रचित खड़ीबोली का सर्वप्रथम महाकाव्य 'प्रियप्रवास' और राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध रचना 'भारत भारती' इस युग की देन है। श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी आदि भी इस युग के श्रेष्ठ कवि हैं। इन सभी कवियों का ध्यान राष्ट्र एवं समाज के हित लगातार बना रहा।

पत्र

पत्र भाषा की एक व्यावहारिक विधा है। प्रेषक अपने मन के विचार जब किसी व्यक्ति तक नियत ढाँचे में लिखित रूप से पहुँचाता है तब पत्र कहलाता है। अनौपचारिक और औपचारिक पत्र होते हैं। अनौपचारिक पत्र मित्रों तथा संबंधियों के बीच व्यवहार में आता है तो

औपचारिक पत्र कार्यालयी तथा सरकारी व्यवहार के लिए प्रयुक्त होता है। पत्र में कल्पना का कोई स्थान नहीं होता परंतु अनौपचारिक पत्र की भाषा हृदय के निकट रहती है। पत्र में संबोधन, विषयवस्तु तथा स्वनिर्देश का पालन किया जाता है।

भाषण

भाषण में बड़ी ताकत होती है। यह एक व्यावहारिक विधा है। वक्ता जब अपने विचारों से श्रोताओं को प्रभावित करता है तब भाषण सफल बनता है। भाषण की एक शैली होती है, परंतु प्रत्येक वक्ता के अनुसार शैली में थोड़ा-बहुत परिवर्तन आ जाता है। यह भाषण की जीवंतता है। यहीं पर भाषण एक कला बन जाता है। विश्व में बहुत सारे महान प्रभावशाली ऐतिहासिक भाषण हुए हैं जिनसे प्रेरित होकर श्रोतागण सब कुछ अर्पित करने को तैयार हुए।

सफ़रनामा

जब अपनी यात्रा के अनुभवों की प्रस्तुति कलात्मकता के साथ की जाती है तब सफ़रनामा का जन्म होता है। लेखक की शैली के अनुसार यह आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक बनता जाता है। इसमें कल्पना के लिए ज़्यादा गुंजाइश

नहीं है। जब बीते हुए यथार्थ और भोगी हुई संस्कृति का वर्णन सरल, सहज शैली में होता है तब रोचकता बनी रहती है। यह रोचकता सफ़रनामा का अनिवार्य गुण है। इससे ही पढ़ने की प्रेरणा मिलती है। सफ़रनामा में लेखक की दृष्टि तथ्यों की ओर अधिक जाती है। संवेदनशीलता सफ़रनामा को साहित्यिक रचना का दर्जा देती है।

भक्तिकालीन पद

भक्तिकाल साहित्य का सुवर्णकाल माना जाता है। भक्त कवियों ने भक्तिरस में सराबोर होकर जो कविताएँ रचीं वे अमर बन गईं। इनमें कबीरदास के पद प्रमुख हैं, जिन्होंने ईश्वर के निर्गुण रूप को चित्रित किया। भक्तिकालीन कृष्ण भक्त कवियों ने भी मुख्य रूप से अपनी भक्ति भावना की प्रस्तुति के लिए पदों का सहारा लिया। पद गेय कविताएँ हैं। भक्तिकाल के सूरदास, मीराबाई और रसखान जैसे श्रेष्ठ कृष्ण भक्त कवियों ने पदों के माध्यम से अपने आराध्यदेव का गुणगान किया। इन कृष्ण भक्ति-पदों में उन्होंने व्रज भाषा का माधुर्य भर दिया है।

फ़िल्मी गीत

फ़िल्म यथार्थ और कल्पना की सीमा रेखाओं से हमारा सफर कराती है तो उसके गीत भावनाओं की आसमानी उड़ान से हमारे मन की भूख मिटा देते हैं। इसी कारण से गीत फ़िल्म को पीछा छोड़कर कालजयी बनता है। आज हिंदी भारत की संपर्क भाषा है। इसको संपर्क भाषा के रूप में फैलाने में तथा पूरे भारतवासियों के दिल में हिंदी के प्रति प्रेम पैदा करने में हिंदी फ़िल्मी गीतों की अहम भूमिका रही है। प्रेम, वेदना, दोस्ती, विरह, मिलन सबको पंक्तियों में समेटकर श्रोता को भाव विभोर करनेवाले हिंदी गीत हर भारतीय के दिल में धड़कन बनकर और ओंठों में गुनगुनाहट बनकर हमेशा बने रहेंगे।

पारिभाषिक शब्द

पारिभाषिक शब्द विशिष्ट अर्थवाले शब्द हैं। हिंदी में पारिभाषिक शब्दों की जानकारी से रोज़गारी की संभावना बढ़ जाती है। हिंदी में उपाधियाँ प्राप्त स्नातकों के लिए केंद्र सरकार, बैंक तथा विभिन्न निगमों में अनुवादक से लेकर राजभाषा अधिकारी तक के पदों के अवसर हैं। अनुवाद तथा पारिभाषिक शब्दों की जानकारी ऐसे पदों

पर नियुक्ति का पहला मापदंड है। केंद्र सरकार के अंतर्गत गृह मंत्रालय के अधीन एक राजभाषा विभाग और मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग है। ये दोनों क्रमशः राजभाषा एवं पारिभाषिक शब्दों के प्रचार एवं प्रसार में कार्यरत हैं।

आत्मकथा

आत्मकथा में लेखक स्वयं अपनी बात कहता है और अपने जीवन की घटनाओं को प्रकाश में लाता है। इसके लिए आत्मकथाकार अतीत की स्मृति में जीता है और वर्तमान की सच्चाई में अपने को परखता है। आत्मकथा उसके जीवन की कमियों और खूबियों का संतुलित इतिहास है। इसमें वह एक साथ स्रष्टा और सामग्री की भूमिका निभाता है। आत्मकथा पाठकों के लिए प्रेरणा का आश्रय स्रोत है। आत्मगाथा, आत्मवृत्त, आपबीती, आत्मचरित, मेरी कहानी जैसी संज्ञाओं से भी आत्मकथा पुकारी जाती है।

हिंदीतर प्रदेश का हिंदी साहित्य

हिंदी साहित्य के विकास में हिंदी भाषी साहित्यकारों के समान हिंदीतर भाषी हिंदी साहित्यकारों का भी खूब योगदान रहा है। भक्तिसाहित्य की भक्ति का उदय

द्रविड़ प्रांत में हुआ था। यह उक्ति प्रसिद्ध है - 'भक्ति द्रविड़ उपजी लाए रामानंद'। बाद में वह पूरे उत्तर भारत में तूफ़ान बनकर पहुँची। हिंदी साहित्य का सृजन और फैलाव हिंदी प्रदेश में हुआ, परंतु उसकी तरंगें अवश्य सुदूर हिंदीतर प्रांतों में भी पहुँच गई। इसप्रकार केरल जैसे हिंदीतर प्रांत में हिंदी साहित्य का मौलिक सृजन होने लगा। आज साहित्यिक दृष्टि से केरल का हिंदी साहित्य भी कम महत्वपूर्ण नहीं है।

नारी विषयक कहानी

कहानी, साहित्य की आदिम विधा है। परंतु गद्य में कहानी सृजन उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशकों में हुआ था। कहानी में जीवन के किसी अंश या मनोभाव का प्रस्तुतीकरण होता है। प्रेमचंद हिंदी साहित्य के कहानी-सम्राट माने जाते हैं। कई कहानीकारों ने नारी जीवन के दुख-दर्दों को अपनी कहानियों का विषय बनाया है। हिंदी की महिला कहानीकारों ने नारी की समस्याओं को निकट से समझकर उनके प्रति हमदर्दी प्रकट की है। उनकी लेखनी में भारतीय नारी का सच्चा रूप उभरकर आया है। आज नारीवादी साहित्य का प्रसार हुआ है, जिसमें नारी के विभिन्न रूप दृष्टिगत होते हैं।

साहित्यिक अनुवाद

अनुवाद भाषांतरण है। एक भाषा के विचार दूसरी भाषा में अनुवाद द्‌वारा पहुँचाए जाते हैं। हिंदी में अठारहवीं सदी के अंतिम दशकों से लेकर विभिन्न भाषाओं की साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद होने लगा। आज विश्व भर की भाषाओं की साहित्यिक रचनाओं का अनुवाद हिंदी में हो रहा है। इससे उन भाषा क्षेत्रों के साहित्य, संस्कृति एवं सभ्यता से पाठक परिचित हो जाते हैं।

संस्मरण

बीते जीवन की मीठी-कड़वी स्मृतियाँ भावानुकूल भाषा में जब प्रस्तुत होती हैं तब वह संस्मरण कहलाती हैं। संस्मरण में यथार्थ जीवन का चित्रण होता है। इसमें कल्पना के लिए स्थान नहीं है। कुशल संस्मरणकार जब सुंदर और रोचक ढंग से विगत घटनाओं को प्रस्तुत करते हैं तब पाठकों को कहानी जैसा आनंद आता है। संस्मरण की घटनाएँ दिल को छूनेवाली होती हैं।

समकालीन कविता

समकालीन कविता में आक्रोश एवं विद्रोह का प्रत्यक्ष स्वर बहुत कम सुनाई पड़ता है। वह शांत और संयत स्वर में कथ्य में छिपी मानवीय संवेदना को गहरी ईमानदारी के साथ प्रस्तुत करती है। समकालीन कविता हमारे सम्मुख समस्या प्रस्तुत करती है, पर वह समाधान की उम्मीद नहीं रखती। वह बेसहारों की कविता है, हाशिएकृतों की कविता है और अंततः हारे हुओं की कविता है।

व्यंग्य साहित्य

एक ही भाषा में एक ही बात को संप्रेषित करने के अलग तरीके होते हैं। इसमें एक तरीका है व्यंग्य साहित्य। व्यंग्य में सुई की तरह चुभने की क्षमता होती है। यह हास्य से भिन्न है। हास्य में हँसने की क्रिया मुख्य है, पर व्यंग्य में हँसने की क्रिया गौण है। व्यंग्य पाठक को सोचने के लिए विवश करता है। भक्तिकालीन कवि कबीरदास से लेकर वर्तमान साहित्यकार तक व्यंग्य का सहारा लेते दिखाई पड़ते हैं। सामाजिक विसंगतियों पर चोट पहुँचाने में तथा उनका विरोध करने में व्यंग्य सशक्त हथियार है।

मित्रो, हिंदी की दुनिया में घुसकर पत्रिकाएँ, समाचार पत्र, साहित्यिक विधाएँ, ब्लोग आदि आदि... के अनमोल खजाने प्राप्त करने के लिए इन वेब-पतों का इस्तेमाल करें...
www.gyanonweb.blogspot.in/p/news.html
www.dir.hinkhoj.com